Entered
19.3.1960

Presented to State Museum Library,
Lucknow.
by- Mohan Lal Nigam
13-3-60

Reprinted from

JOURNAL OF THE U. P. HISTORICAL SOCIETY

(उत्तरप्रदेश इतिहासपरिषद् पत्रिका)

Vol. VI (N. S.) Parts I—II

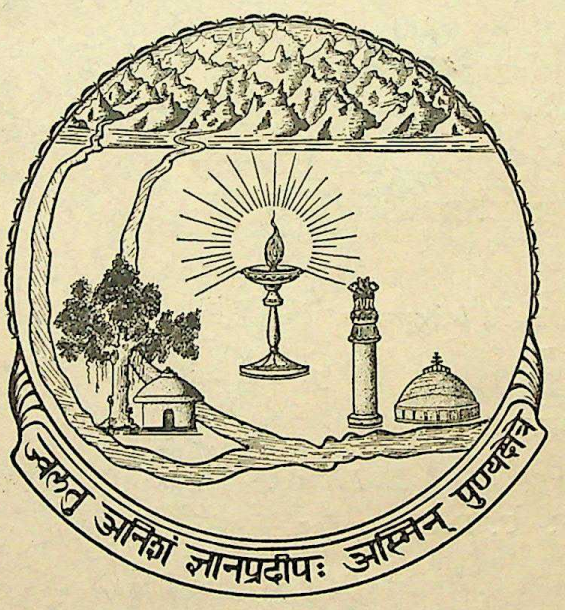

456

EDITOR
C. D. CHATTERJEE

PUBLISHED BY THE HONY. SECRETARY,
U. P. HISTORICAL SOCIETY,
LUCKNOW.
1958

456

State Museum.
LUCKNOW.

THE U. P. HISTORICAL SOCIETY, LUCKNOW.

Chief Patron

Sri V. V. Giri, Sri Rajyapal of Uttar Pradesh

Patrons

Hon'ble Sri Kamalapati Tripathi, Home and Education Minister, U. P.

Prof. K. A. S. Iyer, Vice-Chancellor, Lucknow University

Office-bearers

President

Hon'ble Dr. Sampurnanand, Chief Minister, U.P.

Vice-Presidents

Sri Prayag Dayal
Dr. N. L. Chatterji

Hony. Secretary

Dr. R. K. Dikshit

Hony. Treasurer

Sri B. N. Srivastava

Hony. Auditors

Bhargava & Co.

Editor

Prof. C. D. Chatterjee

Members of the Executive Committee

Dr. G. S. Misra
Dr. S. N. Das Gupta
Dr. S. L. Pande

Members of the Editorial Board

Dr. N. L. Chatterji
Sri M. M. Nagar
Prof. C. D. Chatterjee (Chairman)

State Museum,
LUCKNOW.

राजशेखर कालीन भारत की भौगोलिक सीमाएं

श्री मोहन लाल निगम, सहायक संग्रहाध्यक्ष, राजकीय संग्रहालय, लखनऊ

कविराज राजशेखर संस्कृत-जगत के न केवल एक सुविख्यात प्रबंधकार एवं नाटककार ही हैं वरन् उन्हें भौगोलिक विषयों का भी पर्याप्त ज्ञान था। उनकी प्रत्येक कृति से उनका भूगोल विषयक महानानुराग तथा परिचय प्रदर्शित होता है। "काव्य मीमांसा" के सप्तदश अध्याय 'देश विभाग' में मध्य एशिया से लेकर सम्पूर्ण भारतवर्ष तथा दक्षिणी पूर्वी द्वीप समूह जो कि वृहत्तर भारत के ही अंग थे, इत्यादि भूभाग का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। यद्यपि अधिक जिज्ञासु पाठकों के लिए उन्होंने अपने 'भुवन कोष"[1] की ओर संकेत किया है। "बाल-रामायण' के दशम अंक में लंका से लेकर अयोध्या पर्यंत दक्षिणी राज्यों की नामावली तथा उनका वर्णन दिया गया है। इसी प्रकार राजशेखर द्वारा विरचित अन्य ग्रन्थों जैसे "कर्पूरमंजरी" (सट्टक) 'विद्धशालभंजिका' (नाटिका) एवं 'बालभारत' या 'प्रचंड पांडव' (नाटक) में भी अनेक जनपदों, नगरों, नद, नदियों, पर्वतों के नाम एवं उनकी विशेषताओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। प्रसिद्ध आलोचक लैन्मन के मतानुसार कर्पूरमंजरी (सट्टक) में प्रयुक्त पात्र चाहे ऐतिहासिकता पूर्ण हों अथवा न हों परन्तु इतना निश्चित है कि इसमें दक्षिण भारत के किसी भाग का दृश्य उपस्थित किया गया है। बाल रामायण एवं प्रचंड पांडव या बालभारत नाटकों में सीता और द्रौपदी के स्वयंवरों के अवसर पर भारत के विभिन्न जनपदों और उनके शासकों के नाम व वर्णन प्रस्तुत किये गये हैं। परन्तु खेद का विषय है कि कविराज राजशेखर की कोई भी भूगोल संबंधी स्वतन्त्र रचना अभी प्राप्त नहीं हो सकी है। काव्य मीमांसा में उन्होंने अपने 'भुवनकोष' का उल्लेख अवश्य किया है परन्तु अभी तक यह ग्रन्थ लुप्त ही है। आशा है कि उपरोक्त ग्रन्थ के मिलने पर प्रस्तुत विषय में अधिक प्रकाश डाला जा सकेगा। काव्यमीमांसा की रचना द्वारा लेखक का मन्तव्य 'कवि रहस्य' जैसे गूढ़ विषय को साधारण पाठकों के लिए सरल एवं सुबोध बनाना है। अतः इसके सप्तदश अध्याय में देशविभाग की चर्चा गौड़ रूप से ही की गयी है। परन्तु फिर भी इस महानिबन्ध में जो भारतीय भूगोल का वर्णन मिलता है वह रामायण, महाभारत, वृहत्संहिता, तालमी, पुराणों, हेनसांग तथा अल्बरूनी इत्यादि के वर्णनों से पूर्ण साम्य रखता है। अतः इसकी प्रमाणिकता पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता। हां, यह संभव है कि इस काल तक आकर राजनैतिक उथल पुथल के कारण प्राचीन जनपदों तथा उनकी सीमाओं में कुछ हेर फेर हो गया हो। फिर भी कर्पूरमंजरी तथा विद्धशालभंजिका में उद्धृत राज्यों एवं नगरों के वर्णन और उनकी भौगोलिक सीमाएं तत्कालीन ही हैं।

भारतवर्ष के नौ खंड: भारतवर्ष की सीमाओं का प्रमुख वर्गीकरण हमें सर्वप्रथम वराहमिहिर की 'वृहत्संहिता' के 'कूर्म विभाग' नामक प्रकरण से प्राप्त होता है जहां पर अखिल भारतवर्ष नौ खंडों में विभाजित किया गया है। भारतवर्ष का यह वर्गीकरण बहुत पूर्व ही प्रयोग में

---

1. "यस्तु जिगीषत्यधिकं पश्यतु मद्भुवनकोशमसौ" का० मी० अ० १७ पृ० सं० २३६

आ चुका था क्योंकि बराहमिहिर ने स्वयं 'पराशरतंत्र' से यह वर्णन उद्धृत किया है। साथ ही महाभारत तथा अनेक पुराणों में भी इन नौ खंडों की चर्चा की गई है। लेकिन वह वृहत्संहिता के वर्णन से भिन्न है। विभिन्न पुराणों में उपरोक्त नौ खंडों को निम्नांकित संज्ञाएं प्रदान की गई हैं।[1]

:१: इन्द्र द्वीप :२: कशेरूमत् :३: ताम्रपर्ण :४: गभस्तिमत् :५: नाग द्वीप :६: सौम्य :७: गान्धर्व और :८: वारूण।

पुराणों में केवल आठ नाम ही दिये गये हैं। सम्भवतः नवें खण्ड की सुप्रसिद्धि के कारण उसके नाम देने की आवश्यकता ही नहीं समझी गयी। नौ द्वीपों को गम्भीरार्णवों के कारण एक दूसरे से पृथक एवं अप्राप्य बतलाया गया है। कविराज राजशेखर[2] ने अपनी काव्यमीमांसा में दक्षिण समुद्र से हिमालय तक फैले हुए नवम् द्वीप को 'कुमारी द्वीप' कहा है। उपरोक्त वर्णनों से स्पष्ट हो जाता है कि यहां पर 'भारतवर्ष' का प्रयोग आधुनिक अर्थ में केवल भारत के लिए ही नहीं किया गया वरन् इसका तात्पर्य वृहत्तर भारत से ही है जिसमें मध्य एशिया से लेकर सम्पूर्ण आधुनिक भारत तथा दक्षिणी पूर्वी एवं पूर्वी द्वीप समूह सम्मिलित थे। तभी तो इन नौ खंडों को एक दूसरों से समुद्रों द्वारा विभक्त एवं अप्राप्य कहा गया है। मुस्लिम इतिहासकार अल्बरूनी भी, जिसने भारतवर्ष के उपरोक्त नौ खण्डों का वर्णन किया है, इसी मत से सहमत है। उसके कथनानुसार आधुनकि भारतवर्ष के भूभाग समुद्रों द्वारा विभक्त नहीं है और न उनको भारतीयों ने कहीं पर द्वीपों की संज्ञाएं ही प्रदान की हैं।[3] तब निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कविराज राजशेखर द्वारा उद्धृत 'कुमारी द्वीप' ही आधुनिक भारतवर्ष के वास्तविक अर्थ का द्योतक है। इसके सर्वज्ञात होने के कारण ही पुराण कारों ने इसके नाम देने की आवश्यकता नहीं समझी थी। पुराणों[4] में इस नवम द्वीप (कुमारी-द्वीप) का वर्णन देते हुए इसे दक्षिण व उत्तर में सहस्रों योजन तक विस्तृत बतलाया गया है और इसके पूर्वी सीमान्त भाग में किरातों एवं पश्चिमी सीमान्त भाग में यवनों (ग्रीक) के निवास करनें के उदाहरण प्राप्त होते हैं। भारत की पूर्वी सीमा पर किरातों के निवास स्थान का समर्थन हमें तालमी[5] के वर्णन से भी प्राप्त होता है। इसी प्रकार भारत के उत्तरी, पश्चिमी सीमान्त प्रदेशों में बसे हुए यवनों (ग्रीक) के वर्णन भी हमें महाभारत के भीष्म पर्व तथा अन्य प्राचीन साहित्यिक कृतियों से प्राप्त होते हैं। प्रो० सुरेन्द्रनाथ[6] मजूमदार ने भी कनिंघम की 'एन्शियस्ट ज्योग्रेफी आव् इंडिया' का सम्पादन करते हुए 'कुमारी द्वीप' को ही आधुनिक भारतवर्ष का परिचायक खंड स्वीकार किया है। अतः निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि भारत के प्राचीन भूगोल वेत्ताओं ने पौराणिक भारतवर्ष से द्वीपान्तर अथवा वृहत्तर भारत का अर्थ ग्रहण किया था और आधुनिक भारत उसका 'कुमारी द्वीप' संज्ञक सर्वज्ञात प्रधान

---

1. मा० पु० इ० पार्जिटर, अ० ५७, पृ० सं० २८४
2. 'कुमारी द्वीपश्चायं नवमः" का० मी०; अ० १७; पृ० सं० २२३
3. अल्बरूनीज इंडिया, सचाऊ, भाग १ अ० २९ पृ० सं० २९५
4. मा० पु० ५७, ५.११
5. मेक्रेन्डल, पृ० सं० २१९
6. कनिंघमज ऐन्शियन्ट ज्योग्रेफी आव् इंडिया, सु० ना० मजूमदार, परिशिष्ट १, पृ०सं०७५०

खंड था। 'कुमारी द्वीप' उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ बतलाया गया है। इसके अन्तर्गत विन्ध्य, पारियात्र, शुक्तिमान, ऋक्ष, महेन्द्र, सह्य और मलय सात पर्वत हैं। इस समूचे क्षेत्र पर विजय प्राप्त करने वाला सम्राट चक्रवर्ती कहा गया है।[1] कौटिल्य ने भी इसी मत का अनुमोदन अपने अर्थशास्त्र में किया है। शेष आठ खंडों का परिचय निश्चित रूप से नहीं दिया जा सकता क्योंकि पुराणकारों ने उनके सम्बन्ध में कोई भी निश्चित मत प्रस्तुत नहीं किया है। प्रसिद्ध विद्वान कनिंघम[2] ने पौराणिक संकेतों के आधार पर मध्य में कुमारिक (कुमारी द्वीप) पूर्व में इन्द्र द्वीप, पश्चिम में वारुण और सम्भवतः उत्तर में कशेरूमत द्वीपों की स्थिति निर्धारित की है। मुस्लिम इतिहासकार अल्बरूनी का मत इससे सर्वथा भिन्न है। अल्बरूनी[3] द्वारा प्रस्तुत रेखाचित्र में प्रदर्शित नौ खण्डों के मध्य में इन्द्र द्वीप, पूर्व में कशेरूमत, दक्षिण-पूर्व में ताम्रपर्ण, दक्षिण में गभस्तिमत्, दक्षिण-पश्चिम में नागद्वीप, पश्चिम में सौम्य, उत्तर पश्चिम में गान्धर्व और उत्तरी-पूर्वी सीमा पर नगर संवृत् द्वीप स्थित है। वास्तव में जैसा कि श्री मजूमदार का मत है, अल्बरूनी द्वारा कथित अन्तिम नाम 'नगर संवृत' कोई नवीन द्वीप नहीं है वरन् भूल से ही यह पौराणिक 'सागर संवृत' शब्द के लिए प्रयुक्त हुआ है। अतः अल्बरूनी के 'नगर संवृत' से कुमारी द्वीप का ही भाव ग्रहण करना उचित होगा क्योंकि पुराणों में भी नवम द्वीप की संज्ञा न देकर वहां पर सागर संवृत ही दिया गया है। भारतवर्ष के अन्य खंडों में ताम्रपर्ण का तादात्म्य निश्चित रूपेण लंका से स्थापित किया जा सकता है। श्री सु० ना० मजूमदार ने पुराणों एवं ग्रीक भूगोलकार तालमी के उल्लेखों के उद्धरण प्रस्तुत करते हुए इन्द्र द्वीप को आधुनिक वर्मा का परिचायक द्वीप स्वीकृत किया है। पाणिनि की अष्टाध्यायी में दी गयी परिभाषा के अनुसार द्वीप, स्थल का वह भाग है जो दो ओर से जल द्वारा आवृत हो। अतः श्री मजूमदार के उपरोक्त कथन को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। कशेरूमत का शाब्दिक अर्थ है 'कशेरू वाला' अथवा 'वह भूमि जहां पर कशेरू अधिक उत्पन्न होता है। प्राचीन काल से ही कशेरू के लिए सिंगापुर सुविख्यात है। अतः कशेरूमत या कशेरूमान को मलय प्रायद्वीप का द्योतक भूभाग स्वीकार कर सकते हैं। इसी प्रकार 'गान्धर्व' भी गान्धार का समानार्थक देश है। अल्बरूनी के अनुसार गान्धर्व द्वीप उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित था। परन्तु श्री सु० ना० मजूमदार ने रामायण एवं महाभारत के प्रमाणों के आधार पर इसे उत्तरापथ में ही स्थित बतलाया है। पार्जिटर महोदय[4] के शब्दों में गान्धर्व वास्तव में दैवी गायकों की एक जाति है लेकिन गन्धर्व नाम के लोग भी महाभारत के सभा पर्व में मानस ह्रद के उस पार निवास करते हुए बतलाये गये हैं। इसी जनपद को जीत कर धनुर्धर अर्जुन ने सुन्दर अश्वों के उपहार अर्जित किये थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग के वर्णन के अनुसार गान्धार जनपद, जिसमें काबुल की घाटी तथा सिन्धु के पूर्ववर्ती भू-भाग निहित थे, सीमान्त में स्थित होने के कारण बाह्याक्रमणकारियों एवं बर्बर जातियों का निवास-स्थान बन गया था। यही

---

1. का० मी०, अ० १७, पृ० सं० २२३
2. 'ऐन्शियन्ट' ज्योग्रेफी आव् इण्डिया कनिंघम, पृ० सं० ८
3. 'अल्बरूनीज इण्डिया' सचाऊ, भाग १, अ० २९ पृ० सं० २९६
4. मा० पु०, पार्जिटर, पृ० स० ३८४

कारण है कि पुराणों में गान्धर्व एक पृथक खंड बतलाया गया है। शेष द्वीप जैसे गभस्तिमान नाग एवं सौम्य पौराणिक संकेतों के अनुसार क्रमशः दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम और पश्चिमोत्तर दिशाओं में स्थित थे। श्री सु० ना० मजूमदार ने उपरोक्त संकेतों को लेकर इन द्वीपों की स्थिति संदिग्ध रूप से वर्तमान भारत के दक्षिण-पश्चिमी एवं पश्चिमी द्वीप समूहों के बीच निर्धारित की है। परन्तु अपने कथन की पुष्टिके लिए श्री मजूमदार ने कोई अधिक विश्वस्त प्रमाण उपस्थित नहीं किये और वह स्वयं भी उपरोक्त गभस्तिमत, नाग एवं सौम्य आदि द्वीपों की स्थिति के विषय में शंकायुक्त हैं। लेखक की अल्पमति के अनुसार इन द्वीपों का भी परिचय वर्त्तमान भारत के दक्षिणी एवं दक्षिण-पूर्वी द्वीपों से ही देना श्रेयस्कर होगा। प्रथमतः पुराणों में कहीं पर भी इन द्वीपों की स्थिति को स्पष्ट रूप से नहीं बतलाया गया। इसके अतिरिक्त कनिंघम ने जो इन द्वीपों की स्थिति के संबंध में लिखा है वह अल्बरूनी के वर्णन से सर्वथा भिन्न है। अतः वह अधिक विश्वासपूर्ण नहीं कहा जा सकता है।

दूसरे, भारत एवं पूर्वी द्वीप समूहों का पारस्परिक वाणिज्य सम्बन्ध जैसा कि हमको पेरीप्लस से ज्ञात होता है, ईसा के कई शतियों पूर्व ही स्थापित हो चुका था। अतएव इन द्वीपोंके निवासी भारतवर्ष की भूमि तथा संस्कृति से भलीभांति परिचित थे। प्रसिद्ध विद्वान वैलेस के अनुसार तो पूर्वी द्वीपसमूह अति प्राचीनकाल में एशिया खंड के ही भू-प्रदेश थे। इसके अतिरिक्त 'कथा सरित्सागर' और 'रघुवंश' आदि में भारत और दक्षिणी तथा दक्षिणी-पूर्वी द्वीप समूहों को "द्वीपान्तर भारत" की संयुक्त संज्ञा प्रदान की गयी है। प्रसिद्ध विद्वान श्री रमेशचन्द्र मजूमदार ने बृहत्तर भारत सम्बन्धी अपने नवीनानुसन्धानों द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि ईसा के लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व ही भारत के महत्वाकांक्षी अथवा विप्लवी राजकुमारों, बौद्ध परिव्राजकों और स्वर्णलोलुप वणिकों ने सुदूर दक्षिण-पूर्व के द्वीपों में जाकर वहां अपनी राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक महत्ता को स्थापित किया था। यह सांस्कृतिक आधिपत्य आगे चल कर सातवाहन शासकों एवं गुप्त सम्राटोंके शासनकालमें अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया। अतः पुराणों तथा अन्य संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त भारतवर्ष संज्ञक भू-प्रदेश इसी 'द्वीपान्तर' अथवा 'बृहत्तर भारत' का ही द्योतक है। प्रस्तुत मत की पुष्टि में यहां पर यह कह देना भी उचित ही होगा कि भारतवर्ष के अन्तर्गत स्थित नौ खंडों एवं वर्त्तमान दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी द्वीपों के कुछ नामोंमें आज भी पर्याप्त साम्य ध्वनित होता है। उदाहरणार्थ वर्त्तमान सुमात्रा को पौराणिक सौम्य, बोर्नियों को वर्हिण अथवा वारुण और नीकोबार को नाग द्वीप के द्योतक नाम कह सकते हैं। शेष गभस्तिमत की स्थिति के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

बृहत्तर भारत के नौ खंडों के अतिरिक्त भारत के अन्तर्गत स्थित भूभागों की भी संयुक्त संज्ञाएं हमें कविराज राजशेखर की 'काव्य मीमांसा' में प्राप्त होती हैं। उदाहरणार्थ, उत्तरापथ, आर्यावर्त, मध्यदेश, अन्तर्वेदी एवं दक्षिणापथ इत्यादि। उपरोक्त भू-प्रदेशों के वर्गीकरण तथा उनकी भौगोलिक सीमाएं मनुस्मृति, अर्थशास्त्र और पुराणों से ही मिलती जुलती है।

उत्तरापथ : कविराज राजशेखर ने पृथूदक से उत्तर की ओर वाले सम्पूर्ण प्रदेश को उत्तरा-

खंड था। 'कुमारी द्वीप' उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ बतलाया गया है। इसके अन्तर्गत विन्ध्य, पारियात्र, शुक्तिमान, ऋक्ष, महेन्द्र, सह्य और मलय सात पर्वत हैं। इस समूचे क्षेत्र पर विजय प्राप्त करने वाला सम्राट चक्रवर्ती कहा गया है।[1] कौटिल्य ने भी इसी मत का अनुमोदन अपने अर्थशास्त्र में किया है। शेष आठ खंडों का परिचय निश्चित रूप से नहीं दिया जा सकता क्योंकि पुराणकारों ने उनके सम्बन्ध में कोई भी निश्चित मत प्रस्तुत नहीं किया है। प्रसिद्ध विद्वान कनिंघम[2] ने पौराणिक संकेतों के आधार पर मध्य में कुमारिक (कुमारी द्वीप) पूर्व में इन्द्र द्वीप, पश्चिम में वारुण और सम्भवतः उत्तर में कशेरूमत द्वीपों की स्थिति निर्धारित की है। मुस्लिम इतिहासकार अल्बरूनी का मत इससे सर्वथा भिन्न है। अल्बरूनी[3] द्वारा प्रस्तुत रेखाचित्र में प्रदर्शित नौ खण्डों के मध्य में इन्द्र द्वीप, पूर्व में कशेरूमत, दक्षिण-पूर्व में ताम्रपर्ण, दक्षिण में गभस्तिमत्, दक्षिण-पश्चिम में नागद्वीप, पश्चिम में सौम्य, उत्तर पश्चिम में गान्धर्व और उत्तरी-पूर्वी सीमा पर नगर संवृत् द्वीप स्थित है। वास्तव में जैसा कि श्री मजूमदार का मत है, अल्बरूनी द्वारा कथित अन्तिम नाम 'नगर संवृत' कोई नवीन द्वीप नहीं है वरन् भूल से ही यह पौराणिक 'सागर संवृत' शब्द के लिए प्रयुक्त हुआ है। अतः अल्बरूनी के 'नगर संवृत' से कुमारी द्वीप का ही भाव ग्रहण करना उचित होगा क्योंकि पुराणों में भी नवम द्वीप की संज्ञा न देकर वहां पर सागर संवृत ही दिया गया है। भारतवर्ष के अन्य खंडों में ताम्रपर्ण का तादात्म्य निश्चित रूपेण लंका से स्थापित किया जा सकता है। श्री सु० ना० मजूमदार ने पुराणों एवं ग्रीक भूगोलकार तालमी के उल्लेखों के उद्धरण प्रस्तुत करते हुए इन्द्र द्वीप को आधुनिक वर्मा का परिचायक द्वीप स्वीकृत किया है। पाणिनि की अष्टाध्यायी में दी गयी परिभाषा के अनुसार द्वीप, स्थल का वह भाग है जो दो ओर से जल द्वारा आवृत हो। अतः श्री मजूमदार के उपरोक्त कथन को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। कशेरूमत का शाब्दिक अर्थ है 'कशेरू वाला' अथवा 'वह भूमि जहां पर कशेरू अधिक उत्पन्न होता है। प्राचीन काल से ही कशेरू के लिए सिंगापुर सुविख्यात है। अतः कशेरूमत या कशेरूमान को मलय प्रायद्वीप का द्योतक भूभाग स्वीकार कर सकते हैं। इसी प्रकार 'गान्धर्व' भी गान्धार का समानार्थक देश है। अल्बरूनी के अनुसार गान्धर्व द्वीप उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित था। परन्तु श्री सु० ना० मजूमदार ने रामायण एवं महाभारत के प्रमाणों के आधार पर इसे उत्तरापथ में ही स्थित बतलाया है। पार्जिटर महोदय[4] के शब्दों में गान्धर्व वास्तव में दैवी गायकों की एक जाति है लेकिन गन्धर्व नाम के लोग भी महाभारत के सभा पर्व में मानस ह्रद के उस पार निवास करते हुए बतलाये गये हैं। इसी जनपद को जीत कर धनुर्धर अर्जुन ने सुन्दर अश्वों के उपहार अर्जित किये थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग के वर्णन के अनुसार गान्धार जनपद, जिसमें काबुल की घाटी तथा सिन्धु के पूर्ववर्ती भू-भाग निहित थे, सीमान्त में स्थित होने के कारण बाह्याक्रमणकारियों एवं बर्बर जातियों का निवास-स्थान बन गया था। यही

---

1. का० मी०, अ० १७, पृ० सं० २२३
2. 'ऐन्शियन्ट' ज्योग्रेफी आव् इण्डिया कनिंघम, पृ० सं० ८
3. 'अल्बरूनीज इण्डिया' सचाऊ, भाग १, अ० २९ पृ० सं० २९६
4. मा० पु०, पार्जिटर, पृ० स० ३८४

कारण है कि पुराणों में गान्धर्व एक पृथक खंड बतलाया गया है। शेष द्वीप जैसे गभस्तिमान नाग एवं सौम्य पौराणिक संकेतों के अनुसार क्रमशः दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम और पश्चिमोत्तर दिशाओं में स्थित थे। श्री सु० ना० मजूमदार ने उपरोक्त संकेतों को लेकर इन द्वीपों की स्थिति संदिग्ध रूप से वर्तमान भारत के दक्षिण-पश्चिमी एवं पश्चिमी द्वीप समूहों के बीच निर्धारित की है। परन्तु अपने कथन की पुष्टिके लिए श्री मजूमदार ने कोई अधिक विश्वस्त प्रमाण उपस्थित नहीं किये और वह स्वयं भी उपरोक्त गर्भास्तमत, नाग एवं सौम्य आदि द्वीपों की स्थिति के विषय में शंकायुक्त हैं। लेखक की अल्पमति के अनुसार इन द्वीपों का भी परिचय वर्त्तमान भारत के दक्षिणी एवं दक्षिण-पूर्वी द्वीपों से ही देना श्रेयस्कर होगा। प्रथमतः पुराणों में कहीं पर भी इन द्वीपों की स्थिति को स्पष्ट रूप से नहीं बतलाया गया। इसके अतिरिक्त कनिंघम ने जो इन द्वीपों की स्थिति के संबंध में लिखा है वह अल्बरूनी के वर्णन से सर्वथा भिन्न है। अतः वह अधिक विश्वासपूर्ण नहीं कहा जा सकता है।

दूसरे, भारत एवं पूर्वी द्वीप समूहों का पारस्परिक वाणिज्य सम्बन्ध जैसा कि हमको पेरीप्लस से ज्ञात होता है, ईसा के कई शतियों पूर्व ही स्थापित हो चुका था। अतएव इन द्वीपोंके निवासी भारतवर्ष की भूमि तथा संस्कृति से भलीभांति परिचित थे। प्रसिद्ध विद्वान वैलेस के अनुसार तो पूर्वी द्वीपसमूह अति प्राचीनकाल में एशिया खंड के ही भू-प्रदेश थे। इसके अतिरिक्त 'कथा सरित्सागर' और 'रघुवंश' आदि में भारत और दक्षिणी तथा दक्षिणी-पूर्वी द्वीप समूहों को "द्वीपान्तर भारत" की संयुक्त संज्ञा प्रदान की गयी है। प्रसिद्ध विद्वान श्री रमेशचन्द्र मजूमदार ने बृहत्तर भारत सम्बन्धी अपने नवीनानुसन्धानों द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि ईसा के लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व ही भारत के महत्वाकांक्षी अथवा विप्लवी राजकुमारों, बौद्ध परिव्राजकों और स्वर्णलोलुप वणिकों ने सुदूर दक्षिण-पूर्व के द्वीपों में जाकर वहां अपनी राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक महत्ता को स्थापित किया था। यह सांस्कृतिक आधिपत्य आगे चल कर सातवाहन शासकों एवं गुप्त सम्राटोंके शासनकालमें अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया। अतः पुराणों तथा अन्य संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त भारतवर्ष संज्ञक भू-प्रदेश इसी 'द्वीपान्तर' अथवा 'वृहत्तर भारत' का ही द्योतक है। प्रस्तुत मत की पुष्टि में यहां पर यह कह देना भी उचित ही होगा कि भारतवर्ष के अन्तर्गत स्थित नौ खंडों एवं वर्त्तमान दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी द्वीपों के कुछ नामोंमें आज भी पर्याप्त साम्य ध्वनित होता है। उदाहरणार्थ वर्त्तमान सुमात्रा को पौराणिक सौम्य, बोर्नियों को वर्हिण अथवा वारुण और नीकोबार को नाग द्वीप के द्योतक नाम कह सकते हैं। शेष गभस्तिमत की स्थिति के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

वृहत्तर भारत के नौ खंडों के अतिरिक्त भारत के अन्तर्गत स्थित भूभागों की भी संयुक्त संज्ञाएं हमें कविराज राजशेखर की 'काव्य मीमांसा' में प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ, उत्तरापथ, आर्यावर्त, मध्यदेश, अन्तर्वेदी एवं दक्षिणापथ इत्यादि। उपरोक्त भू-प्रदेशों के वर्गीकरण तथा उनकी भौगोलिक सीमाएं मनुस्मृति, अर्थशास्त्र और पुराणों से ही मिलती जुलती है।

उत्तरापथ : कविराज राजशेखर ने पृथूदक से उत्तर की ओर वाले सम्पूर्ण प्रदेश को उत्तरा-

पथ कहा है।[1] पृथूदक आधुनिक 'पिहोवा' के नाम से विख्यात हैं जो सरस्वती नदी के तट पर स्थित है। बाणभट्ट ने भी अपने हर्षचरित में उत्तरापथ की इसी सीमा का वर्णन किया है। परन्तु बाद में चल कर इसका प्रयोग आर्यावर्त के लिए किया जाने लगा।

आर्यावतः उत्तर में हिमालय एवं दक्षिण में विन्ध्य पर्वतों के मध्य में तथा पूर्व व पश्चिम के समुद्रों से आवृत भू-भाग को आर्यावर्त की संज्ञा दी गई है। मनु[2] ने भी आर्यावर्त की इसी सीमा को स्वीकार किया है। राजशेखर के शब्दों में आर्यावर्त सदाचार युक्त भूमि थी जहां पर चारों आश्रमों एवं वर्णों का विधिवत् पालन होता था।

मध्यदेश : मध्यदेश गंगा के दोआब की भूमि है जो पूर्व में पंजाब से लेकर बिहार तक विस्तृत है। कविराज राजशेखर ने हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य तथा विनशन से पूर्व और प्रयाग से पश्चिम वाले प्रदेश को मध्यदेश कहा है। राजशेखर का यह वर्णन मनुस्मृति के अनुकूल है।

अन्तर्वेदी : राजशेखर ने अपनी काव्यमीमांसा में देश विभाग का उल्लेख करते हुए नवीन संज्ञक, 'अन्तर्वेदी' की चर्चा की है जिसके अन्तर्गत विनशन से लेकर प्रयाग तक का गंगा-यमुना द्वारा सिंचित प्रदेश निहित है। काव्य-मीमांसाके अनुसार यह प्रदेश भारत का हृदय है और इसके अन्तर्गत स्थित कान्यकुब्ज को केन्द्र मानकर दिग्विभाग करना चाहिए।

दक्षिणापथ : दक्षिणापथ् से साधारणतः विन्ध्यश्रेणी के नीचे समस्त दक्षिणी भारत के भू-भाग का अर्थ लिया जाता है जिसमें अमरकंटक से लेकर उड़ीसा के उत्तर तक की परत सम्मिलित है। राजशेखर ने माहिष्मती के आगे सम्पूर्ण दक्षिणी भारत को दक्षिणापथ की संज्ञा दी है।

अंग : भागलपुर से मुंगेर तक फैले हुए भू-भाग का नाम अंग देश है। इसकी राजधानी चम्पापुरी थी जो भागलपुर से दो मील की दूरी पर पश्चिम में स्थित है। संस्कृत साहित्य में अंग की स्थिति गिरिव्रज से पूर्व तथा मथुराके दक्षिण पूर्व में प्रदर्शित की गयी है। इसके पश्चिम में गंगा एवं सरयू का संगम था। रामायण काल में यहां का शासक लोमपाद एवं महाभारत काल में कर्ण कहा गया है।

अर्बुदः राजशेखर ने पश्चिम देश में अर्बुद पर्वत एवं जनपद दोनों का ही उल्लेख किया है। अर्बुद पर्वत आधुनिक अरावली पर्वतमाला के प्रसिद्ध आबू पर्वत का परिचायक है जो राजपूताने के सिरोही राज्य के अन्तर्गत विद्यमान हैं। श्री नन्दूलाल दे का मत है कि यह वशिष्ठ ऋषि का तपो-आश्रम था[3]। अब यहां पर जैन तीर्थंकर रिषभदेव का मंदिर है। अर्बुद जनपद इसी पर्वत के आस पास के प्रदेश में विस्तृत रहा होगा।

अवन्ती : पुराणों में इसको वीतिहोत्र की संज्ञा प्रदान की गई है। महाभारत में नर्वदा नदी

---

1. 'पृथूदकात्परतः उत्तरापथः' का० मी०, अ० १७, पृ० स० २२७
2. 'आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्। तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं विदुबुधाः॥ मनुस्मृति।
3. 'दि ज्योग्रेफिकल डिक्शनरी आव् एन्शियन्ट एन्ड मेडिवुल इण्डिया : पृ० सं० ५।

के दक्षिणी तटवर्ती प्रदेशों में इस जनपद का अस्तित्व बतलाया गया है। बाणभट्ट के अनुसार बेतवा नदी के तट पर स्थित विदिशा इसकी राजधानी थी। अतः प्राचीनकाल में अवन्ती में वर्तमान मालवा के भूभाग सम्मिलित थे। उज्जयिनी इसकी राजधानी थी। अवन्तिका शासक विक्रमादित्य भारतीय लोक साहित्य में बहुत प्रसिद्ध है। महाजनपद काल में अवन्ति देश, उत्तरावन्ति और दक्षिणावन्ति दो भागों में बंट गया था। पहले की राजधानी उज्जयिनी तथा दूसरे की माहिष्मती थी।

अश्मक : वायुपुराण में प्रस्तुत जनपद को अश्मक कहा गया है। वृहत्संहिता में दिये गये वर्णन के अनुसार अश्मक उत्तरापथ में स्थित एक जनपद था। परन्तु राजशेखर की काव्य-मीमांसा में इसका अस्तित्व दक्षिणापथ में स्वीकार किया गया है। रामायण एवं महाभारत इत्यादि महाकाव्यों में इसे मध्य भारत में स्थित बतलाया गया है। दण्डिन् के 'दशकुमार चरित्' तथा बाणभट्ट के 'हर्षचरित' के अनुसार अश्मक महाराष्ट्र के अन्तर्गत सम्मिलित था। इस प्रकार प्राचीन साहित्य में अश्मक की स्थिति के विषय में बहुत बड़ा मतभेद है। पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' के "अवन्त्यश्मकं" सूत्र से ज्ञात होता है कि अवन्ती और अश्मक राज्यों की सीमाएं परस्पर संटी हुई थीं। प्रो० हेमचन्द्र राय चौधरी ने गोदावरी नदी के तट पर स्थित राज्य को अश्मक कहा है। इसकी राजधानी पोतालि अथवा पोतन थी जो दक्षिण में हैदराबाद के निकटवर्ती वर्तमान बोधन की परिचायिका है। प्राचीन बौद्ध साहित्य में इसका वर्णन मूलक और कलिंग इत्यादि राज्यों के साथ आया है।

आंध्र : राजशेखर द्वारा विरचित 'विद्धशाल भंजिका' नाटिका में 'आन्ध्र' की चर्चा की गई है। यह जनपद गोदावरी तथा कृष्णा नदियों के मध्यवर्ती भू-प्रदेश में स्थित था। आधुनिक तेलंगाना से इसका तादात्म्य स्थापित किया जा सकता है। प्रसिद्ध विद्वान् बील के कथनानुसार वेंगी नगरी इसकी राजधानी थी। प्रतिष्ठानपुर और धान्यकटक भी इस जनपद की राजधानी रहे।

आनर्तः पुराणों के अनुसार वैवस्वत मनु के प्रपौत्र आनर्त ने इस राज्य की स्थापना की थी। वराहमिहिर की वृहत्संहिता के अनुसार सिंधु-सौवीर इसकी पश्चिमी सीमा पर स्थित थे। श्री नन्दूलाल दे के अनुसार आनर्त के अन्तर्गत समस्त गुजरात और मालवा का कुछ भाग सम्मिलित था। पार्जिटर महोदय के मतानुसार इसकी राजधानी द्वारिका, द्वारावती अथवा कुशस्थली थीं जो कि काठियावाड़ प्रायद्वीप में स्थित आधुनिक द्वारिका की परिचायिका समझी जा सकती है। प्राचीन साहित्य में प्रभास तीर्थ और वल्लभी भी इसी के अन्तर्गत बतलाये गये हैं जिसके आधार पर कुछ ऐतिहासकारों ने सौराष्ट्र को ही आनर्त समझा है।

उत्कल : यह एक प्राचीन जनपद है जिसकी स्थापना मनु की कन्या इला सुद्यम्न के पुत्र उत्कल के द्वारा की गयी थी। विद्वानों ने उत्कल को उत्कलिंग का विकृत रूप समझा है जिसका तात्पर्य उत्तर कलिंग से है। महाभारत तथा पुराणों में इसका मेकल और कलिंग के साथ वर्णन मिलता है। पार्जिटर महोदय के अनुसार इस राज्य की उत्तरी सीमा पर कपिशा नदी प्रवाहित होती थी जिसका परिचय कोशिया से दिया जाता है और सम्भवतः इसकी पश्चिमी सीमा मेकल राज्य से मिली हुई थी। पार्जिटर के अनुसार इसमें बालासोर लोहार दागा और सर्गुजा,

के जिले सम्मिलित थे। महाभारत काल में उत्कल कलिंग का ही एक भाग था परन्तु आगे चल कर जैसा कालिदास के रघुवंश से ज्ञात होता है उत्कल एक स्वतन्त्र राज्य बन गया। अतः श्री भगवत्शरण उपाध्याय[1] के शब्दों में उत्कल राज्य की सीमाएं उत्तर में बंगाल के मिदनापुर जिले में बहती हुई कोशिया नदी तक और दक्षिण में कलिंग तक फैली हुई थी।

कलिंग : प्राचीन साहित्य में प्रायः कलिंग का नाम अंग, वंग के साथ ही वर्णित किया गया है। कलिंग देश बंगाल की खाड़ी के किनारे-किनारे दक्षिणमें द्रविड़ और उत्तरमें उड़ीसा तक फैला हुआ था। प्रोफेसर कनिंघम के अनुसार इसकी दक्षिणी पश्चिमी सीमा पर गोदावरी नदी प्रवाहित होती थी। महाभारत काल में उड़ीसा का अधिकांश भाग इस राज्य में सम्मिलित था और यही कारण है कि उत्तर में वैतरणी नदी तक इसकी सीमाएं विस्तृत बतलाई गई हैं। प्रसिद्ध विद्वान पार्जिटर ने आधुनिक उड़ीसा, जिला गंजाम, और विजगापट्टम के अधिकांश भूभागों को इस राज्य की सीमा के अन्तर्गत निहित माना है। कविराज राजशेखर ने दक्षिण और पूर्व के सम्मिलित प्रदेशों को कलिंग कहा है। इसकी राजधानी 'दन्तकूर' थी जिस का महाभारत में दन्तपुर के नाम से उल्लेख किया गया है।

कर्णाट अथवा कर्नाटक : पार्जिटर महोदय के मतानुसार यह जनपद हैदराबाद के दक्षिणी पश्चिमी भू-भागों में पश्चिमीघाट तक तथा दक्षिण में नीलगिरि की पहाड़ियों तक फैला हुआ था। महाभारत के भीष्म पर्व में कर्णाटकों का उल्लेख किया गया है। यह आंध्र के दक्षिण व पश्चिम का प्रान्त था जिसमें मैसूर और कुर्ग के जिले सम्मिलित थे। कविराज राजशेखर ने कर्णाट देश के कवियों के पाठ्यक्रम का वर्णन करते हुए बतलाया है कि वह बड़े स्पष्ट एवं गर्वपूर्ण ढंग से कविता पाठ करते थे।

कर्णसुवर्ण : कविराज राजशेखर ने इसका वर्णन अपने सट्टक कर्पूरमंजरी में किया है। श्री नन्दूलाल दे के मतानुसार कर्णसुवर्ण का परिचायक कनसोना नगर मुर्शिदाबाद जिले में स्थित है जो कि किसी समय बंगाल की राजधानी थी। कनसोना का आधुनिक नाम रांगामाती है जोकि प्राचीनकाल में कनसोनापुरी कहा जाता था। ह्वेनसांग ने कर्णसुवर्ण को ताम्रलिप्ति के उत्तर-पश्चिम में तथा उड़ीसा के उत्तरी-पूर्वी भाग में स्थित बतलाया है। इस प्रकार इसके अंतर्गत मिदनापुर और सरगुजा के पहाड़ी इलाके सम्मिलित थे।

ऋथकैशिक : राजशेखर ने इस जनपद को दक्षिणापथ में बतलाया है। यद्यपि ऋथकैशिक महाभारत काल से ही विदर्भ देश का एक अंग था परन्तु राजशेखर ने उसे विदर्भ से पृथक वर्णित किया है। महाभारत के सभापर्व में वर्णित कथानक के अनुसार विदर्भ के शासक ने इस राज्य को ऋथ और कैशिक दो राजकुमारों में विभक्त कर दिया था। अतः इसका नाम ऋथकैशिक पड़ा। रघुवंश के पंचम सर्ग में ऋथकैशिक का प्रयोग विदर्भ के लिए ही किया गया है।

कच्छीय : कनिंघम ने इसे कच्छ की खाड़ी का द्योतक राज्य स्वीकार किया है। कच्छ संज्ञक राज्य, जिसकी राजधानी कच्छेश्वर सिंधु नदी के तट पर स्थित थी, कच्छ की खाड़ी का परिचायक नहीं कहा जा सकता। 'कच्छ' जिसका अर्थ सू० ना० मजूमदार ने समुद्री किनारे को निकटवर्ती भूमि बतलाया है, सिंधु नदी के निचले प्रदेश में निर्धारित किया जा सकता है।

---

1. ज० आव् यू० पी० हि० सो० भाग २ दिसम्बर १९४४।

करकंठ : राजशेखर ने करकंठ का नाम उत्तरापथ के जनपदों में दिया है। कुछ विद्वानों ने इसको कोरम पर्वत श्रेणी की घाटियों में स्थित बतलाया है।

कामरूप : कामरूप वर्तमान आसाम प्रदेश का संस्कृत नाम है। प्राचीनकाल में इस विस्तृत भूभाग की सीमाएं चीन तक फैली हुयी थीं। यही कारण है कि कौटिल्य, ह्वेनसांग तथा अलबरूनी इत्यादि लेखकों ने इसके लिए चीन शब्द का प्रयोग किया है। अतएव इस राज्य के अन्तर्गत संभवतः ब्रह्मपुत्र नदी की सम्पूर्ण घाटी निहित रही होगी। प्रो० कनिंघम[1] के अनुसार इसमें कुशबिहार और भूटान के प्रदेश भी सम्मिलित थे। पुराणों में इसकी राजधानी प्राग्ज्योतिषपुर कही गयी है। कालिदास ने रघुवंश में इस राज्य की चर्चा की है। इसकी पश्चिमी सीमा पर करतोया नदी प्रवाहित होती थी। राजशेखर ने अपनी काव्यमीमांसा में भारत के पूर्वी भाग में कामरूप को जनपद न बतलाकर पर्वत कहा है जो कि सम्भवतः नीलगिरि का ही दूसरा नाम है। इस पर्वत के कारण ही इस प्रदेश का नाम कामरूप पड़ा होगा।

कश्मीर : यह देश आधुनिक कश्मीर का परिचायक है। ह्वेनसांग के समय में इस राज्य के अन्तर्गत काश्मीर घाटी और साथ ही सिंधु नदी से लेकर चिनाब तक पहाड़ी प्रदेश सम्मिलित था। परन्तु लगभग नवीं शती के अन्त तक इसकी सीमाएं कुछ कम हो गयीं थीं। मुस्लिम लेखक अबूरिहान् के अनुसार इसकी राजधानी अधिस्थान थी जिसका परिचायक आधुनिक श्रीनगर है।

कम्बोज : कम्बोज जनपद पंजाब के सुदूर उत्तर में और सिंधु नदी के उस पार स्थित था। महाभारत में इसका वर्णन शकों और यवनों के साथ मलेच्छों के रूप में किया गया है। हांलाकि ये लोग आर्यभाषा का प्रयोग करते थे[2]। महाराज मनु के अनुसार यह लोग क्षत्रिय थे परन्तु वेद निषिद्ध कार्य करने के कारण हेय समझे जाते थे। प्रसिद्ध विद्वान लैसेन के अनुसार कम्बोज संभवतः काशगर के दक्षिण में तथा आधुनिक कफरिस्तान के पूर्व में स्थित था। कम्बोज देश की ख्याति वहां से प्राप्त विशाल तथा अच्छे प्रकार के अश्वों के कारण थी। रिज डेविड्स ने द्वारिका को कम्बोज की राजधानी बतलाया था। परन्तु आधुनिक विद्वानों ने महाभारत में वर्णित राजपुर (आधुनिक रजौरी) को जो कश्मीर के दक्षिण में है इस देश की राजधानी के रूप में निर्धारित किया है। प्रो० वासुदेवशरण अग्रवाल[3] ने आधुनिक पामीर और बदख्शां के सम्मिलित भू-भाग को कम्बोज जनपद कहा है। इसके दक्षिण में फैली हुई हिन्दुकुश की ऊंची पर्वत श्रृंखला इस जनपद को भारतवर्ष से अलग करती थी। प्रो० अग्रवाल के मतानुसार राजपुर (आधुनिक रजौरी) अभिसार जनपद के अन्तर्गत था। अतः उसे कम्बोज की राजधानी नहीं कह सकते। परन्तु डा० हेमचन्द्रराय चौधरी ने उपरोक्त मत का खंडन करते हुए लिखा है कि राजपुर कम्बोज जनपद का ही एक भाग था।

कावेर : कावेरी नदी के तट पर स्थित तथा उसके निकटवर्ती प्रदेश को कावेर देश कहा गया है।

---

1. एन्शियन्ट ज्योग्राफी आव् इंडिया, पृष्ठ सं० ३८।
2. म्योर्स संस्कृत टेक्ट्स २, ३६८.९।
3. पाणिनिकालीन भारतवर्ष अ० २, पृ० सं० ६१।

कुन्तल : महाभारत के भीष्म पर्व और कर्ण पर्व म कुन्तल राज्य का वर्णन किया गया है। श्री दे तथा पार्जिटर के मतानुसार इसमें बिलारी तथा उसके निकटवर्ती जिले सम्मिलित थे। राजशेखर ने कुन्तल को दक्षिणापथ में स्थित बतलाया है। बाल रामायण नाटक में राजशेखर ने कुन्तल को विदर्भ के अन्तर्गत स्वीकार किया है[1]। श्री मिराशी[2] के शब्दों में महाराष्ट्र का दक्षिणी भाग कुन्तल कहा जाता था। सी० आर० लैनमन[3] ने कर्पूरमंजरी सट्टक में वर्णित भूगोल की चर्चा करते हुए कृष्णा के ऊपरी भाग और तुंगभद्रा द्वारा सिंचित प्रदेश को कुन्तल बतलाया है जिसके अनुसार इसके अन्तर्गत बम्बई का महा प्रान्त और हैदराबाद का सुदूरवर्ती दक्षिणी भाग, मद्रास के उत्तरी पश्चिमी प्रदेश और मैसूर के जिले सम्मिलित थे। इसकी राजधानी वत्सगुल्म कही गई है।

कुलूत : राजशेखर के अनुसार कुलूत उत्तरापथ का जनपद था। आधनिक कांगड़ा जिले की कुहू तहसील से इसका परिचय दिया जाता है जो कि व्यास नदी की ऊपरी घाटी पर स्थित है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस जनपद का वर्णन करते हुए इसे जालन्धर से ११७ मील दूर स्थित बतलाया है। नन्दूलाल दे के अनुसार इसकी राजधानी नगरकोट थी। कुछ विद्वानों ने स्थानपुर (सुल्तानपुर) को इसकी राजधानी स्वीकार किया है जो आज भी इसका प्रधान नगर है।

कीर : विद्वानों ने इसे पश्चिमोत्तर प्रदेश में कीथर पर्वत श्रेणी के आसपास के भूभाग में स्थित जनपद समझा है। किन्तु राजशेखर के वर्णन के अनुसार यह उत्तरापथ का एक जनपद था। कुछ ऐतिहासिकारों के अनुसार यह कश्मीर का एक भाग था।

केकय : पुराणों में प्रस्तुत जनपद के केकय, कैकय और कैकेय इत्यादि नामों का उल्लेख किया गया है। यह एक प्राचीनतम राज्य है जिसका उल्लेख हमें उपनिषदों, रामायण, महाभारत तथा पुराणों इत्यादि में मिलता है। प्राचीन साहित्य में केकय तथा मद्र दोनों जनपदों का एक साथ उल्लेख किया गया है। प्रसिद्ध विद्वान् लैसेन ने केकय जनपद को रावी और व्यास नदियों के मध्य में स्थित प्रदर्शित किया है। कनिंघम ने कैकय देश की सीमा वाहीक देश के पश्चिम में निर्धारित की है। उपरोक्त विद्वान् के मतानुसार झेलम नदी के तट पर स्थित गिरजाक (आधुनिक जलालपुर) नामक स्थान ही रामायण में वर्णित केकय जनपद की राजधानी राजगृह का द्योतक है। महाभारत में इस देश के निवासी धनुर्विद्या में प्रवीण कहे गय हैं। डा० मोतीचन्द[4] ने प्रस्तुत जनपद को पंजाब में स्थित शाहपुर एवं झेलम जिलों में विस्तृत बतलाया है।

केरल : यह एक वन प्रदेशीय राज्य था[5]। कालिदास के रघुवंश में इसको

---

1. कर्पूरमंजरी, एम० एम० घोष, भूमिका, पृ० सं० ६६।
2. एनाल्स आव् भंडारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना ११, पृ० सं० ३६६।
3. कर्पूरमंजरी, सी० आर० लैनमन, पृ० सं० २१३।
4. ज० आव् यू० पी० हि० सो० भाग १, पृ सं० ५६, जुलाई १९४४।
5. म० भा० सभा प०, अ० ३०, ११७४ .५।

पश्चिमी सीमा में वर्णित किया गया है । पार्जिटर महोदय[1] ने इन्हें कालीकट से लेकर कन्या-कुमारी तक समस्त पश्चिमी घाट की सीमा पर विस्तृत कहा है। वास्तव में इस राज्य के अन्तर्गत मलावार, ट्रावनकोर और कोचीन के भाग सम्मिलित थे। अशोक के शिलालेखों में पांड्य देश के उत्तर में केरलपुत्त की चर्चा की गयी है। ह्वेनसांग ने इसका उल्लेख नहीं किया है क्योंकि उसके समय में यह पांड्य राज्य के अन्तर्गत था।

कोशल : राजशेखर ने कोशल की गणना पूर्व देश के राज्यों में की है। प्रस्तुत जनपद दो भागों में विभक्त था। (१) उत्तर कोशल और (२) दक्षिण कोशल या महाकोशल। राज-शेखर द्वारा वर्णित कोशल जनपद दक्षिण अथवा महाकोशल का ही द्योतक है। इसके अन्तर्गत विन्ध्यश्रेणी से लगे हुए छत्तीसगढ़ इत्यादि जिले निहित थे। कथा सरित्सागरके अनुसार इसकी राजधानी चिरायु थी।

कोकण : यह आधुनिक परशुराम क्षेत्र का परिचायक है। पौराणिक कथाओं के अनुसार यह देश परशुराम द्वारा सागर से अर्जित किया गया था। कोकण राज्य के अन्तर्गत पश्चिमी घाट से लेकर समुद्र पर्यन्त के विस्तृत भूभाग निहित थे जिसके अन्तर्गत केरल, सुराष्ट्र कर्णाटक, बर्बर तथा कोकण के भू भाग आते हैं।

कोल्लगिरि : पार्जिटर महोदय का कथन है कि कोल्लगिरि महाभारत के अश्वमेध पर्व में वर्णित 'कोल्वगिरेय' नामक स्थान प्रतीत होता है। अतः वर्तमान कुर्ग जिसका प्राचीन नाम कोडुगु था, ही इसका परिचायक है। एक दूसरे मत के अनुसार कोल्लगिरि आधुनिक 'क्रेगेनूर' नगर का परिचायक स्थान बतलाया गया है जो कोचीन से १८ मील दूर उत्तर में स्थित है।

गांग : राजशेखर के मतानुसार गांग दक्षिणापथ में स्थित राज्य था जो वर्तमान 'कोगु' का परिचायक है। प्रो० सु० ना० मजूमदार की राय में इस राज्य में मैसूर के अधिकांश भाग सम्मिलित थे। इसके उत्तर में कृष्णा और तुंगभद्रा नदियां प्रवाहित होती थीं। दक्षिण में कोगु, उत्तर पूर्व में नोलम्ब वाडी, पश्चिम में बनवासी और दक्षिण पश्चिम में मैसूर जनपद स्थित थे। ह्वेनसांग के समय में यह राज्य चालुक्य सम्राटों के अधीन था। इस जनपद में दीर्घ-काल तक गांग वंश के राजाओं ने शासन किया। संभवतः इसीलिये इसे गांग जनपद कहा गया है। इसमें मैसूर, कोयम्बटूर तथा सलेम के जिले निहित थे।

गौड़ : श्री नन्दूलाल दे के कथनानुसार समस्त बंगाल गौड़ देश कहा जाता था। इसकी राजधानी भी इसी नाम से विख्यात थी। राजशेखर ने अपनी काव्यमीमांसा के अन्तर्गत गौड़ देश की ललनाओं की प्रशंसा की है[2] और वहां के कवियों की प्राकृत भाषा के विस्वर एवं कर्णकटु उच्चारण का भी वर्णन किया है।

गुर्जर : कविराज राजशेखर ने गुर्जर[3] राज्य का वर्णन सौराष्ट्र और त्रवण राज्यों के साथ किया है। अतः यह निश्चित ही है कि इस काल तक गुर्जर सुराष्ट्र से भिन्न राज्य था। ह्वेनसांग द्वारा दिए गए वृत्तान्त के अनुसार स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सातवीं शती

---

1. मा० पु०, पार्जिटर पृ० सं० ३३१।
2. का० मी० अ० ३ पृ० सं० १८।
3. का० मी० अ० ७, पृ० सं० ८३।

तक सुराष्ट्र को गुर्जर देश की संज्ञा नहीं दी गयी थी। वर्तमान मारवाड़ प्रदेश ही राजशेखर द्वारा वर्णित गुर्जर देश का परिचायक राज्य स्वीकार किया जा सकता है। यद्यपि राजशेखर के आश्रयदाता गुर्जर प्रतिहार नरेशों की साम्राज्य सीमाएं अत्यधिक बड़ी थी।

गांधार : गांधार जनपद रामायण के गान्धर्व देश का अपभ्रंश है। पाणिनि ने इस जनपद का नाम गान्धारि एक सूत्र में दिया है। प्राचीनकाल में गांधार एक बहुत प्रसिद्ध देश था। ग्रीक भूगोल वेत्ता तालमी के वर्णनों से मालूम होता है कि सिन्धु नदी इस राज्य की पूर्वी सीमा बनाती थी। नन्दूलाल दे का मत है कि इस राज्य में पेशावर एवं यूसुफजाई इत्यादि के भूभाग सम्मिलित थे जहां की खुदाइयों से इस प्राचीन नगर के ध्वंशावशेष प्राप्त हुए हैं। इसकी राजधानी पुरुषपुर अथवा आधुनिक पेशावर थी। डा० अग्रवाल[1] का मत है कि प्रस्तुत राज्य कुनड़ या काश्कर नदी से तक्षशिला तक फैला हुआ था। पश्चिमी गांधार की राजधानी पुष्कलावती (यूनानी पिउकलावती) थी जहां स्वात और काबुल नदियों के संगम पर वर्तमान चारसद्दा स्थित है।

चोल : चोल दक्षिणापथ का एक अति प्राचीन जनपद है जिसका वर्णन महाभारत के सभापर्व एवं वन पर्वों में, कात्यायन के वार्तिकों और अशोक के शिलालेखों में प्राप्त होता है। इसका दूसरा नाम द्राविड़ भी कहीं कहीं पर साहित्य में मिलता है। किसी समय इस देश का विस्तार बहुत अधिक था परन्तु राजशेखर के काल में इसमें तंजौर, त्रिचनापल्ली और दक्षिण अर्काट के जिले सम्मिलित थे। इसकी राजधानी कान्चीपुर या कान्ची थी। राजशेखर ने कांची और कावेर इत्यादि जिलों को चोल जनपद से पृथक बताया है।

तोषल : राजशेखर ने तोषल की गणना पूर्व देश के जनपदों के अन्तर्गत की है। अशोक के शिलालेखों में तोषाली का नाम आया है जो तोषल की राजधानी थी। तोषल कोशल जनपद का दक्षिणी भाग कहा जा सकता है।

तंगण : राजशेखर के वर्णन के अनुसार प्रस्तुत जनपद उत्तरापथ में था। इस जनपद के विभिन्न नाम तंगण (वायु पुराण) टंकण (रामायण) तथा तुंगण (मार्कन्डेय पुराण) इत्यादि साहित्य में मिलते हैं। महाभारत के कई स्थानों पर प्रस्तुत जनपद के वर्णन किरात, कुनिन्द, रमठ, श्री राज्य, मुंड, पुलिंद इत्यादि पर्वतीय गणराज्यों के साथ आते हैं जोकि हिमालय की तराई में सुबाहु नामक शासक के अन्तर्गत विद्यमान थे। महाभारत में इस जनपद को तंगण एवं परतंगण में विभक्त किया गया है जो कि पार्जिटर महोदय के मतानुसार निकटस्थ एवं दूरस्थ तंगण राज्यों का भाव प्रकट करते हैं। ग्रीक भूगोल वेत्ता तालमी ने तंगनोई जनपद का वर्णन किया है जो कि गंगा की पूर्वी सीमा में स्थित थे और उनके राज्य से होकर सरबोस नदी प्रवाहित होती थी। अतः यह प्रदेश रामगंगा नदी से लेकर सरयू के ऊपरी भाग तक विस्तृत था जो कि तालमी की सरबोस नदी की परिचायिका है।

ताम्रलिप्तक : राजशेखर द्वारा पूर्व देश में वर्णित ताम्रलिप्तक जनपद वर्तमान तामलुक का संस्कृत रूप है। प्रस्तुत जनपद के विभिन्न नाम साहित्य में प्राप्त होते हैं। उदाहरणार्थ महाभारत में इसको ताम्रलिप्त और ताम्रलिप्तक दोनों ही नामों से पुकारा गया है।

---

1. पाणिनि कालीन भारतवर्ष, पृ० सं० ६२।

वायुपुराण एवं राजशेखर ने इसे तामलिप्तक कहा है। दंडिन के दशकुमार चरित में सुह्य जनपद के तामलिप्त एवं दामलिप्त नगरो का वर्णन है। आधुनिक तामलुक बंगाल के मिदिनापुर जिले में रूप नारायण नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। सुविख्यात विद्वान् कनिंघम के शब्दों में ताम्रलिप्तक जनपद हुगली नदीके पश्चिमी उपजाऊ प्रदेश में उत्तर में वर्दवान जिले से लेकर दक्षिण में कोशिया नदी तक फैला हुआ था।

तुषार : राजशेखर ने उत्तरापथ के जनपदों में इसका वर्णन किया है। रामायण एवं महाभारत महाकाव्यों में तुखार जनपद के वर्णन मिलते हैं जो संभवतः वायुपुराण और राज शेखर के तुषार जनपद का ही द्योतक है। हरिवंश में प्रस्तुत जनपद का वर्णन शक, दरद एवं पल्हव इत्यादि म्लेच्छ जातियों के साथ मिलता है। लैसन ने तुषार को हिन्दुकुश की उत्तरी सीमा पर प्रदर्शित किया है।

तुरुष्क : काव्यमीमांसा में दिये गये वर्णन के अनुसार प्रस्तुत जनपद उत्तरापथ में स्थित था। विद्वानों ने इसे पूर्वी तुर्किस्तान या चीनी तुर्किस्तान का द्योतक बतलाया है।

द्रविड़ : कविराज राजशेखर ने द्रविड़ देश को कोई जनपद विशेष न कहकर दक्षिण भारत का भूभाग बतलाया है। द्रविड़ आधुनिक तामिल का संस्कृत रूप है जिसमें दक्षिणा पथ का, उत्तर में कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदियोंसे लेकर दक्षिणमें कन्याकुमारी तक, भूभाग निहित था। चोल, चेर और पांड्य राज्य इसके अन्तर्गत माने गये हैं। द्रविड़ देश की राजधानी कांची थी।

दंडक : राजशेखर के मतानुसार दण्डक दक्षिणापथ में स्थित जनपद बतलाया गया है। महाभारत में भी दण्डकारण्य वन में स्थित राज्य को दंडक की संज्ञा प्रदान की गयी है। रामायण में वर्णित दण्डकारण्य मध्यभारत के दक्षिणी बुन्देलखण्ड प्रदेश से लेकर गोदावरी तक फैला हुआ था। परन्तु जैसा कि पार्जिटर महोदय का मत है आर्यों के दक्षिण में प्रसार के साथ ही साथ यह वन केवल गोदावरी के उद्गम स्थान तथा राप्ती नदी के निचले प्रदेशों में ही सीमित रह गया था। इस प्रदेश में स्थित राज्य को ही दण्डक जनपद कहा गया है।

दसेरक : काव्यमीमांसा में वर्णित देश विभाग के अनुसार यह पश्चिम देश में स्थित एक जनपद था। 'अभिधान चिंतामणि' में वर्णित "मखस्तु दसेरका" के अनुसार दशेरक सिंधु के मरुस्थल में स्थित राज्य था। इस प्रदेश में ऊँटों की अधिकता थी और यही कारण है कि ऊँट को भी दशेरक कहा गया है।

देवसभ : देवसभ या देवास मध्य देश एवं पश्चिम देश के सीमान्त में स्थित प्रदेश था। उदयपुर के धेवार झील के प्रदेश को देवसभा कहा गया है।

द्रुपद : यह राज्य दक्षिण पांचाल का प्रदेश था। महाभारत काल में द्रुपद यहां का शासक था। कांपिल्य इस देश का प्रधान नगर था।

नासिक्य : प्रस्तुत जनपद दक्षिणापथ में स्थित था। व्याकरणाचार्य पतंजलि ने भी अपने महाभाष्य में इसका उल्लेख किया है। सातवाहनो, शक क्षत्रपो, तथा आभीरों के लेख यहां पर्याप्त संख्या में मिलते हैं। यह प्रदेश गोदावरी के तट पर बम्बई के उत्तरी पूर्वी भूभागों में फैला हुआ था।

नेपाल : राजशेखर ने नेपाल देश तथा नेपाल पर्वत दोनों का ही उल्लेख पूर्व देश के अन्तर्गत किया है। यह प्रसिद्ध है।

पांड्य : पांड्य जनपद का उल्लेख महाकाव्यों, कात्यायन के वार्तिकों एवं अशोक के शिलालेखों में किया गया है। वाह्य लेखकों में मेगस्थनीज, तालमी तथा प्लिनी आदि ने इसकी चर्चा की है। इसमें वर्तमान मदुरा और तिन्नीवेल्ली जिलों के भाग सम्मिलित थे। रघुवंश के छठवें सर्ग में पांड्य देश की राजधानी उरगपुर (आधुनिक उरयूर) का वर्णन मिलता है[1]। प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ ने उरगपुर का अर्थ नागपुर लिखा है जो कि असान्य है। श्री भगवतशरण उपाध्याय[2] के मतानुसार आधुनिक मदुरा ही प्राचीन उरगपुर का परिचायक है। तामिल भाषा में यह शब्द उरग का पर्यायवाची है।

पांचाल : प्रस्तुत विशाल जनपद के अन्तर्गत रुहेलखंड और मध्य दोआब के भू-भाग सम्मिलित थे। महाभारत एवं दिव्यावदान के अनुसार पांचाल जनपद की सीमाएँ दो भागों में विभक्त थीं। उत्तर पांचाल तथा दक्षिण पांचाल। इन दोनों राज्यों की सीमाओं का विभाजन भागीरथी के द्वारा होता था। उत्तर पांचाल की राजधानी अहिच्छत्रा थी जिसका परिचय बरेली जिले में स्थित आधुनिक रामनगर से दिया जाता है। दक्षिण पांचाल, जिसकी सीमाएँ गंगा से लेकर चम्बल तक फैली हुई थीं, की राजधानी काम्पिल्य थी। दक्षिण पांचाल का दूसरा नाम द्रुपद भी था। राजशेखर के समय में पांचाल जनपद पश्चिम में थानेश्वर से लेकर पूर्व में कोशल की सीमाओं को छूता था और उत्तर में हिमालय की उपत्यिकाओं से लेकर दक्षिण में यमुना और चम्बल के संगम तक स्थित था। राजशेखर के काल में प्रस्तुत राज्य की राजधानी कान्यकुब्ज थी

पारियात्र : पारियात्र या पारिपात्र विन्ध्य श्रेणी की पश्चिमी शाखा है। राजशेखर ने पारियात्र नामक देश की भी चर्चा की है जिसके कवि भूतभाषा या पैशाची भाषा में निपुण थे। संभवतः यह देश पारियात्र पर्वत श्रेणी के निकटवर्ती नर्मदा नदी के उद्गम स्थान से लेकर कच्छ की खाड़ी तक फैला हुआ था।

पुंड्र : पुंड्र जनपद प्रायः अंग, वंग एवं सुह्य इत्यादि जनपदों के साथ वर्णित किया गया है। इसके विभिन्न नाम पुंड्र, पुंड्रक, पौंड्र, पौंड्रक एवं पौंड्रिक इत्यादि महाभारत में मिलते हैं। पार्जिटर महोदय के मतानुसार इनकी उत्तरी सीमा पर काशी, उत्तरी पूर्वी तथा पूर्वी सीमा पर अंग वंग और सुह्य एवं दक्षिणी पूर्वी सीमाओं पर ओद्र जनपद स्थित थे। अतः पुंड्र आधुनिक छोटा नागपुर का परिचायक समझा जा सकता है। यद्यपि इसका दक्षिणी भाग उत्कल जनपद में सम्मिलित था। प्रो० विल्सन ने पुंड्र के अन्तर्गत राजशाही, दीनाजपुर, रंगपुर, नदिया, वीर-भूम, मिदिनापुर इत्यादि जिले सम्मिलित माने हैं।

प्राग्ज्योतिष : प्राचीनकाल में प्राग्ज्योतिष एक महत्वपूर्ण जनपद था। रामायण में इसकी स्थापना का उल्लेख किया गया है। यद्यपि महाभारत में प्रस्तुत जनपद की गणना म्लेच्छ देशों में की गयी है परन्तु इसका शासक भागदत्त सर्वत्र प्रशंसा का पात्र कहा गया है। जैसा

---

1. 'अथोरगाख्यस्य पुरस्यनाथम्' रघु० सर्ग ६, पृ० सं० ५९।
2. जनरल आव् यू० पी० हि० सो० भाग २, पृ० सं० ८, १९४४।

कि साहित्यिक उल्लेखों से ज्ञात होता है इसके अन्तर्गत आसाम तथा उत्तरी बंगाल का कुछ प्रदेश निहित था[1] । प्रस्तुत जनपद की राजधानी का नाम भी प्राग्ज्योतिषपुर था।

पल्लव : राजशेखर ने पल्लव जनपद को दक्षिणापथ के अन्तर्गत बताया है। श्री सुरेन्द्रनाथ मजूमदार के कथनानुसार पल्लवराज के अन्तर्गत बेलारी, अर्काट, चिंगलेपत तथा तंजोर इत्यादि जिले सम्मिलित थे। काञ्ची इस जनपद की प्राचीन राजधानी थी यद्यपि राजशेखर ने कांची को एक स्वतन्त्र जनपद माना है।

पाल : कविराज राजशेखर ने इसे दक्षिणापथ में स्थित एक जनपद बताया है। डा० भण्डारकर[2] के मतानुसार यह पाल महाड़ के निकट स्थित था।

वंग : पार्जिटर महोदय[3] ने वंग जनपद के अन्तर्गत आधुनिक मुर्शिदाबाद, नदिया जसोर, राजशाही के कुछ भाग तथा फरीदपुर इत्यादि जिलों को सम्मिलित बतलाया है। रघुवंश के चतुर्थ सर्ग में वंग देश का वर्णन मिलता है। कालिदास ने गंगा और ब्रह्मपुत्र के दोआब में स्थित भूभाग को वंग देश की संज्ञा दी है। डा० मोतीचन्द का मत है कि वंग देश संपूर्ण बंगाल का परिचायक नहीं हो सकता। इसके अन्तर्गत केवल पूर्वी बंगाल के आधुनिक ढाका तथा चिन्तगांग जिले ही निहित थे। राजशेखर द्वारा वर्णित वंग जनपद भी समस्त बंगाल का परिचायक नहीं कहा जा सकता क्योंकि उन्होंने पुंड्र और सुह्य जनपदों को भी वंग जनपद से पृथक पूर्व देश में ही स्थित माना है।

ब्रह्मपुंड्र : राजशेखर ने प्रस्तुत जनपद को अंग, वंग एवं सुह्य जनपदों के साथ पूर्व में वर्णित किया है। अतः निश्चय ही यह पूर्व वर्णित पुंड्र का ही परिचायक देश है।

बाल्हिक : यह एक अति प्राचीन जनपद है। साहित्य में वाह्लिक, बाहिलक, एवं बाल्हिक नामों का उल्लेख मिलता है। पार्जिटर महोदय के मतानुसार वाह्लिक नाम के दो जनपदों के वर्णन रामायण तथा महाभारत में मिलते हैं। उनमें से एक जनपद मद्र देश के निकट चिनाब और सतलज नदियों के बीच में स्थित था और दूसरा जनपद चिनाब एवं ब्यास नदियों के भूभाग में विद्यमान था। डा० मोतीचन्द[4] का मत है कि कि चूंकि प्रस्तुत जनपद मध्य देश की सीमाओं से बाहर था अतः इसका नाम बाह्लिक दिया गया है। उत्तरी अफगानिस्तान में स्थित बल्ख ही प्राचीन बाल्हिक का परिचायक भूभाग है।

बाल्हवेयः– काव्य मीमांसा में दिये गये वर्णन के अनुसार यह एक उत्तरापथ में स्थित जनपद था। प्रस्तुत जनपद की स्थिति के विषय में पर्याप्त प्रमाण नहीं मिलते। कनिंघम ने मुल्तान और अरोर या अलोर नामक स्थानों के बीच में वाहिया या वहाटिया नामक स्थान का वर्णन किया है। कतिपय विद्वानों के मतानुसार उपरोक्त स्थान ही बाल्हवेय जनपद का द्योतक है।

---

1. मार्कण्डेय पु०, पार्जिटर, पृष्ठ संख्या ३२८।
2. हिस्ट्री आव् डेक्कन, भण्डारकर।
3. ज० ए० सो० ब०; १८९७; पृष्ठ संख्या ८५।
4. ज्योग्रेफिकल एण्ड एकोनोमिक स्ट्डीज इन दि महाभारत, उपायन पर्व, ज० आव् यू० पी० हि० सो०; भाग १ पृष्ठ संख्या ४६।

ब्रम्होत्तरः— प्रस्तुत जनपद की भौगोलिक स्थिति के विषय में कुछ निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। पार्जिटर के मतानुसार मत्स्यपुराण में वर्णित सुहमोत्तर जो कि संभवतः प्र-सुह्म अथवा सुहम के उत्तर के भाग का द्योतक है; अधिक ठीक नाम मालूम पड़ता है। उपरोक्त विद्वान का कथन है कि प्रस्तुत जनपद की शुद्ध संज्ञा सुहमोत्कल हो सकती है जिसका तात्पर्य सुहम एवं उत्कल जनपदों के संयुक्त भू-भाग से लिया जा सकता है परन्तु यह मत अधिक सारगर्भित प्रतीत नहीं होता। राजशेखर ने पूर्व में वर्णित जनपदों में सुहम एवं उत्कल के अतिरिक्त ब्रह्मोत्तर को एक स्वतन्त्र जनपद बतलाया है।

वानवासकः— प्रस्तुत जनपद के विभिन्न नाम बनवासी, वानवासक, एवं वैजयन्ती प्राचीन साहित्य में प्राप्त होते हैं। शिलालेखों के आधार पर सम्राट अशोक ने यहां अपने धर्म प्रचारक भेजे थे। यह काफी समय तक कदम्बों की राजधानी था। प्रसिद्ध विद्वान् तालमी ने बना उसी का उल्लेख किया है। यह तुंगभद्रा की सहायक वरदा नदी के बायें तट पर स्थित है। वानवासक जनपद के अन्तर्गत उत्तर कनारा के भू भाग सम्मिलित थे।

बल्लरः— सम्भवतः दक्षिण भारत के वल्लाल वंश के शासकों द्वारा शासित भू भाग को ही राजशेखर ने बल्लर कहा है। इसके अन्तर्गत बैन्कटगिरि, चित्तूर और वेल्लोरी इत्यादि जिले सम्मिलित थे।

ब्राह्मणवाहः— यह एक अत्यधिक प्राचीन देश था। मुसलमानों के समय से इसका नाम ब्राह्मणवाद पड़ गया। यूनानी लेखकों ने इसे ब्राखमनोई कहा है। अरब भूगोलकार अबूरिंहा ने इसका हिन्दू नाम बमनहवा दिया है जो काव्य मीमांसा में वर्णित ब्राह्मणवाह का देशी रूप है। सिंधु प्रान्त के मध्य में मीरपुर खास से लगभग २५ मील उत्तर में स्थित वर्तमान ब्राह्मणवाद, जहां पर प्राचीनकाल के ध्वंसावशेष विद्यमान हैं, प्रस्तुत जनपद का द्योतक है। यूनानी लेखक प्लूटार्क ने यहां के निवासियों को प्रसिद्ध दार्शनिक तथा देशभक्त बतलाया है।

बोक्काणः— राजशेखर के मतानुसार बोक्काण जनपद उत्तरापथ में स्थित था। इसकी भौगोलिक सीमाओं के विषयमें अधिक ज्ञात नहीं है। कनिंघम ने इसे अफगानिस्तान माना है।

वाणायुज :— राजशेखर ने वाणायुज को उत्तरापथ में उल्लिखित किया है। कतिपय विद्वानों के अनुसार यह अरब देश है। महाकाव्य 'रघुवंश' में बनायु देश की चर्चा की गयी है। कौटिल्यने भी यहां से प्राप्त घोड़ों की प्रशंसा की है।

बर्बर :— यह एक प्राचीन ख्यातिपूर्ण स्थान है। महाभारत में इसका उल्लेख प्रायः शकों और यवनों के साथ किया गया है। प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता तालमी के अनुसार इसका नाम बर्बरी था। पेरीप्लस ने इसे बर्बरिक कहा गया है। पार्जिटर महोदय के मतानुसार यह भारत के पश्चिमी अथवा पश्चिमोत्तर भाग में स्थित था। प्रसिद्ध विद्वान् कनिंघम ने सिंधु नदी के तट पर स्थित 'भम्बूरा' नामक स्थान से इसका तादात्म्य स्थापित किया है। अतः यह सिन्धु-सागर संगम के समीप बर्बरिक नामक समुद्रपत्तन का निकटवर्ती प्रदेश था। परन्तु राजशेखर के काव्यमीमांसा में दिये गये 'देश विभाग' के अनुसार यह उत्तरापथ में स्थित जनपद था।

भृगुकच्छ :— बामन पुराण में दिये गये वर्णन के अनुसार यह राजा बलि की यज्ञभूमि थी। और यहीं पर बामन भगवान ने छलयुक्त ढंग से उसके राज्य का अपहरण किया था। भागवतपुराण

के अनुसार भृगु महर्षि के आश्रम होने के कारण ही इसका नाम भृगुकच्छ पड़ा। साहित्य में प्रस्तुत स्थान के विभिन्न नाम, जैसे भारुकच्च (मत्स्यपुराण) भानुकक्ष (वायुपुराण), भृगुकच्छ (कूर्म विभाग एवं भुवनकोश), वारिगज (तालमी) एवं भड़ोच इत्यादि प्राप्त होते है। कनिंघम के मतानुसार भृगुकच्छ का अर्थ है समुद्री घाट का ऊर्ध्व स्थान। यह गुजरात का प्रसिद्ध भड़ौच या ब्रौच बन्दरगाह है। प्राचीनकाल में भृगुकच्छ लाट देश की राजधानी थी।

महाराष्ट्र:-- प्रो० कनिंघम के कथनानुसार आधुनिक महाराष्ट्र, अभिलेखों में उद्धृत महारठी शब्द से निर्मित किया गया है। अशोक के शिलालेखों में रठ्ठिक, रट्ठि एवं रट्ठ शब्द प्राप्त होते हैं। बाद में अधिक गर्वान्वित करने के लिए इसमें महा शब्द लगा दिया गया। रामायण अथवा महाभारत में इस नाम का उल्लेख प्राप्त नहीं होता। ह्वेनसांग के समय में महाराष्ट्र एक विशाल राज्य के रूप में वर्तमान था। इसकी राजधानी कल्याणी थी। यह गोदावरी के ऊपरी भाग से लेकर कृष्णा पर्यंत विस्तृत आधुनिक महाराष्ट्र प्रदेश है। राजशेखर के समय में इसके अन्तर्गत विदर्भ तथा कुन्तल राज्य सम्मिलित थे।

मगध :-- राजशेखर ने मगध जनपद का उल्लेख पूर्व में किया है। प्रस्तुत जनपद में दक्षिण बिहार के पटना एवं गया जिले सम्मिलित थे। महाभारत एवं पुराणों में दिये गये वर्णन के अनुसार यहां का शासक बृहद्रथ था। आज भी पटना एवं गया जिले के सम्मिलित भूभाग को मगा के नाम से पुकारा जाता है जो कि मगध का ही अपभ्रंश रूप है।

मालव :-- कविराज राजशेखर ने सुराष्ट्र, मालव इत्यादि जनपदों का वर्णन अवन्ति देश के अन्तर्गत किया है। पार्जिटर का मत है कि महाभारत में प्रयुक्त मालव शब्द गण के लिए प्रयुक्त हुआ है, जनपद के लिए नहीं। महाभारत के उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में मालव आधुनिक सम्पूर्ण मालवा का द्योतक नहीं था वरन् अवन्ति के पश्चिम में विन्ध्य श्रेणी तक के उत्तरी मालवा का भाग इसके अन्तर्गत था। राजा भोज के समय में इसकी राजधानी धारानगरी थी।

मुरल :-- दक्षिण पथ के जनपदों में मुरल का उल्लेख आया है। सम्भवतः यह प्राचीन साहित्य में वर्णित मुरला नदी के निकटवर्ती भूभाग में स्थित जनपद रहा होगा। रघुवंश के चतुर्थ सर्ग में सह्य पर्वत और अपरान्त देश के समीप मुरला नदी का वर्णन किया गया है। सु० ना० मजूमदार ने मुरला को नर्वदा नदी का पर्यायवाची नाम बतलाया है। कतिपय विद्वान केरल देश में प्रवाहित काली नदी को मुरला मानते हैं। उपरोक्त वर्णन के आधार पर केरल से अपरान्त तक फैले हुए विस्तृत भूभाग में ही कहीं पर मुरल जनपद स्थित रहा होगा।

मेकल :-- राजशेखर ने दक्षिणा पथ के पर्वतों में मेकल पर्वत की चर्चा की है। काव्य-मीमांसा के तृतीय अध्याय में दक्षिण में स्थित मेकल जनपद का भी वर्णन आया है। प्राचीन साहित्य में मेकल का नाम प्रायःउत्कल के साथ ही मिलता है। पार्जिटर महोदय ने रामायण में दिये गये वर्णन के आधार पर छत्तीसगढ़ के उत्तरी और पश्चिमी पर्वत श्रेणियों को जहां से सोन नदी निकलती है, मेकल कहा है। अतः इसी के निकटवर्ती देश का नाम मेकल जनपद कहा जा सकता है। प्रसिद्ध विद्वान नन्दूलाल दे के कथनानुसार विन्ध्यश्रेणी का वह भाग जिसे अमरकन्टक कहते हैं, प्राचीन मेकल का परिचायक है। यही कारण है कि यहां से प्रवाहित होने वाली नर्मदा नदी को मेकलकन्यका की संज्ञा दी गई है। परन्तु चूंकि महाभारत एवं पुराणों में

मेकल को उत्कल की पश्चिमी सीमा में निर्धारित किया गया है अतः प्रथम मत को ही अधिक प्रमाणित कह सकते हैं।

माद्र :-- माद्र या मद्र देश का उल्लेख प्रचण्ड पाण्डव नाटक में किया गया है। महाभारत-काल में शल्य माद्र का शासक था। मद्र देश की राजधानी शाकल आधुनिक स्यालकोट है। अतः मद्र देश के अन्तर्गत पंजाब का वह भूभाग जिसमें रावी, चिनाब इत्यादि नदियां प्रवाहित होती हैं, सम्मिलित था। वैदिक काल से ही मद्र देश विद्या का केन्द्र समझा जाता था।

मलय :-- काव्य मीमांसा में वर्णित काव्य पुरुष की दक्षिण यात्रा के समय मलय, मेकल इत्यादि जनपदों का वर्णन आया है। प्रस्तुत जनपद मलय पर्वत श्रेणियों का समीपवर्ती भू-प्रदेश रहा होगा। पार्जिटर महोदय ने पश्चिमी घाटों के सुदूर दक्षिण में फैली हुई पर्वत श्रेणी को मलय पर्वत माना है। अतः यही कहीं पर मलय जनपद की स्थिति निर्धारित की जा सकती है।

मुद्गरः- राजशेखर ने मुद्गर जनपद की स्थिति पूर्व देश में बतलाई है। यह जनपद सम्भवतः प्राचीन मुद्गलगिरि नामक पर्वत श्रेणी के आस-पास के भूभाग में स्थित रहा होगा। प्रसिद्ध विद्वान नन्दूलाल दे ने बिहार प्रदेश के गंगा तट पर स्थित आधुनिक मुंगेर को मुद्गल-गिरि का परिचायक स्वीकार किया है। महाभारत के सभापर्व में भी मोदागिरि का उल्लेख मिलता है। कनिंघम के मतानुसार मुद्गलपुरी, मुद्गलाश्रम एवं मुद्गगिरि सभी आधुनिक मुंगेर के प्राचीन नाम हैं।

मलद :-- राजशेखर ने मलद जनपद को पूर्व देश में स्थित बतलाया ह। प्रस्तुत जनपद सम्भवतः मार्कन्डेय पुराण में उल्लिखित मानद और वायुपुराण के मालद राज्य का ही द्योतक है। श्री नन्दूलाल दे ने प्रस्तुत जनपद की स्थिति शाहाबाद जिले के पश्चिमी भाग में बतलाई है। अतः इस जनपद में बिहार प्रान्त के शाहाबाद या आरा जिले के भूभाग सम्मि-लित थे।

मल्लवर्तकः -- मल्लवर्तक जनपद काव्यमीमांसा में वर्णित देश विभाग के अनुसार पूर्व देश में स्थित था। महाभारत में उल्लिखित मल्ल जनपद दो भागों में विभक्त था जिनकी क्रमशः कुशीनारा और पावा दो राजधानियां थीं। प्रो० विल्सन ने कुशीनारा या कुशीनगर को गोरखपुर जिले में स्थित आधुनिक कशिया का प्राचीन नाम कहा है। पावा का परिचय आधुनिक ग्राम पदरौना या फाजिलपुर से दिया जाता है। कतिपय विद्वानों ने मल्लवर्तक को मल्लपर्वत के आस-पास का प्रदेश कहा है। श्री नन्दूलाल दे ने मल्ल पर्वत का तादात्म्य छोटा नागपुर में स्थित आधुनिक पार्श्वनाथ पर्वत से स्थापित किया है। जिसके अनुसार मल्लवर्त्तक जनपद में बिहार के हजारीबाग और मानभूम इत्यादि जिले निहित थे।

माहिष्क :-- राजशेखर के मतानुसार यह दक्षिण पथ का एक जनपद था। महाभारत के अश्वमेध पर्व में वर्णित माहिष्मक भी इसी का पर्यायवाची है। इसकी राजधानी माहिष्मती थी। माहिष्मती का परिचय श्री नन्दूलाल दे ने आधुनिक महेश्वर से, जो इन्दौर से ४० मील दक्षिण में नर्मदा के तट पर स्थित है, दिया है। परन्तु पार्जिटर महोदय उपरोक्त मत से सहमत नहीं है। उनके कथनानुसार माहिष्मती का परिचय मान्धाता प्रदेश से दिया जा सकता है जिसमें रामायण के अनुसार महिश्की नदी प्रवाहित होती थी। अतः प्रस्तुत जनपद नर्मदा नदी की घाटी में कहीं पर मान्धाता और महेश्वर के आस पास स्थित रहा होगा।

यवन :-- राजशेखर के मतानुसार भारत के पश्चिम देश में यवनों का निवासस्थान था। मुख्यतः प्राचीन साहित्य में यवनों से ग्रीक लोगों का ही अर्थ लिया गया है। परन्तु सिकन्दर के आक्रमण के बहुत पूर्व भी यवन शब्द का प्रयोग साहित्य में मिलता है। महाभारत के भीष्मपर्व में गिरि गह्वर यवनों का निवास स्थल कहा गया है

राढ़ :-- कर्पूर मंजरी सट्टक में इस देश का वर्णन किया गया है। कतिपय विद्वानों ने राढ़ देश को सुह्म का परिचायक भाग कहा है। श्री नन्दूलाल दे के मतानुसार राढ़ बंगाल का वह भाग है जो कि गंगा नदी के पश्चिम में वर्त्तमान है।

रमठ :-- प्राचीन साहित्य में प्रस्तुत जनपद के विभिन्न नाम रमट (वायुपुराण) रामठ (मत्स्यपुराण) और रामस (कूर्म पुराण) इत्यादि मिलते हैं। पार्जिटर महोदय ने इन्हें पश्चिम में स्थित देश बतलाया है। परन्तु राजशेखर के काव्यमीमांसा में इनका उल्लेख उत्तरापथ में मिलता है। कनिंघम के अनुसार यह रोमक पर्वत का समीपवर्ती भूभाग है जो सिन्धु नद के उत्तर में स्थित है। कुछ विद्वानों का कथन है कि रामठ नाम हींग का है। चूंकि इस भूभाग में हींग अधिक उत्पन्न होती है अतः, इसका नाम रामठ पड़ा।

लाट :-- राजशेखर ने लाट देश के निवासियों तथा उनके रहन-सहन और भाषा का उल्लेख बाल रामायण (नाटक) विद्धशाल भंजिका (नाटिका), कर्पूरमंजरी (सट्टक) और काव्यमीमांसा के अन्तर्गत अनेक अवसरों पर किया है। बाम्बे गजेटियर में मही नदी से लेकर ताप्ती नदी तक के दक्षिण गुजरात का भाग लाट देश कहा गया है। ईसा की तीसरी शताब्दी तक के साहित्य तथा अभिलेखों में लाट देश का नाम नहीं मिलता। परन्तु निश्चय ही प्राचीन ग्रीक भूगोलवेत्ता तालमी (१५० ई०) ने लरिक देश का उल्लेख किया है जो कि लाट देश का ही परिचायक है। तीसरी शताब्दी के बाद लाट देश का प्रयोग अधिकाधिक किया जाने लगा। कुमार गुप्त के मंदसोर वाले अभिलेख में लाट देश का उल्लेख हुआ है। अजन्ता की गुफाओं में अंकित शिला लेखों में वाकाटक हरिशेण के शिलालेख में भी लाट देश का नाम मिलता है। श्री एम० सी० मेहता[1] का अनुमान है कि अजन्ता की गुफाओं की चित्रकला लाट देश के चित्रकारों द्वारा की गयी थी। अल्बरूनी के मतानुसार लाट देश की सीमाएं थाना जिले से प्रारम्भ होती थी। इसकी राजधानी भृगुकच्छ (आधुनिक–भड़ोच या ब्रोच) थी। कतिपय विद्वानों का[2] मत है कि नवीं तथा दसवीं शताब्दी में लाट देश के अन्तर्गत मध्य गुजरात के ही नहीं बल्कि उत्तर गुजरात के भी भूभाग सम्मिलित थे। श्री सी० आर० लेनमन[3] ने कर्पूरमंजरी का सम्पादन करते हुए बतलाया है कि राजशेखर के समय में नर्मदा नदी के मुहाने के उत्तरी भाग तथा कच्छ की खाड़ी के पूर्व के भाग, जिसमें आधुनिक ब्रोच तथा गुजरात के मध्य एवं दक्षिण के भाग सम्मिलित थे, लाट देश कहा जाता था। अतः उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि भारतीय इतिहास के पूर्व मध्यकाल में लगभग सम्पूर्ण गुजरात लाट देश के नाम से विख्यात था।

---

1. ज० आव वि० उ० रा० सो० १२, पृ० सं० ४९८।
2. द ग्लोरीज दैट् वाज् गुर्जर देश भा. १ अ० ३ पृ० सं० ३२
3. कर्पूरमञ्जरी, सी० आर० लैनमन पृ० सं० २१३

लंका :-- वर्तमान सिंहल या सीलोन को ही लंका माना जाता है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि राजशेखर का मत इससे भिन्न था। उन्होंने अपने बाल रामायण नाटक के दशक अंक में लंका को सिंहलद्वीप से पृथक बतलाया है। लंका से वापस लौटते हुए भगवान श्री रामचन्द्र को विभीषण ने सिंहलद्वीप की ओर संकेत किया है। इसी प्रकार विद्धशाल भंजिका के एक श्लोक में लंका और सिंहल दोनों ही नामों का उल्लेख एक साथ किया गया है [1]। अतः संभव है कि सिंहलद्वीप लंका से आगे और कुमारी द्वीप के पहले वहीं पर समुद्र में स्थित रहा हो।

लिम्पाक :-- राजशेखर ने अपने देश विभाग में लिम्पाक को उत्तरापथ में स्थित जनपद माना है। कनिंघम ने अपनी 'एन्शियट' ज्योग्रफी आफ इन्डिया' में ह्वेन्सांग द्वारा वर्णित लोपो तथा तालमी के लम्बाटू नगर को ही लिम्पाक का द्योतक बतलाया है। यह वर्तमान 'लमघम' नगर है। कनिंघम का यह वर्णन प्रसिद्ध विद्वान लैसन द्वारा बतलाई गई लिम्पाक की स्थितिसे मिलता है। महाभारत के द्रोण पर्व में लिम्पाक को एक पर्वतीय गणराज्य कहा गया है। अतः यह जनपद हिन्दुकुश के दच्छिणी पहाड़ी प्रदेशों में विस्तृत था।

विदर्भ :-- काव्य मीमांसा में विदर्भ दच्छिण पथ का जनपद कहा गया है। यह भारत का अतिप्राचीन और प्रसिद्ध राज्य था। इस राज्य की सीमाओं और राजधानियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। हरिवंशपुराण के अनुसार विदर्भ नामक शासक ने विदर्भानगर की स्थापना की थी जिससे विदर्भ राज्य की नींव पड़ी। यह विदर्भानगर ही बाद में कुन्डिन-नगर के नाम से विख्यात हुआ जो इस जनपद की राजधानी था। महाभारतकाल में विदर्भ का शासक भिष्मक था जिसकी पुत्री रुक्मिणी श्री कृष्ण की राजमहिषी थी। इस राज्य के अन्तर्गत बरार और खान देश के भूभाग सम्मिलित थे। राजशेखर के समय में विदर्भ राज्य महाराष्ट्र के अन्तर्गत था। परन्तु फिर भी इसकी सत्ता कम न थी। प्रसिद्ध विद्वान पीटरसन के मतानुसार वानवासक एवं कुन्तल देश के शासक विदर्भ राज को अपना अधीश्वर मानते थे।

वैदिश :-- राजशेखर ने अवन्ति देश की ओर वैदिश जनपद का उल्लेख किया है। यह जन-पद प्राचीन नगर विदिशा के समीपवर्ती भूभाग में स्थित रहा होगा। विदिशा आधुनिक बेसनगर या भिलसा है जो वेत्रवती या बेतवा नदी के तट पर भोपाल से २६ मील दूर दक्षिण पूर्व में स्थित है। कालिदास और बाणभट्ट, ने इस नगर का वर्णन किया है। यह नगरी प्राचीन दशार्ण देश की राजधानी थी।

विदेह :-- यह पूर्व देश में वर्णित अति प्राचीन जनपद है जिसकी चर्चा शतपथ ब्राह्मण एवं रामायण इत्यादि में की गयी है। यह प्राचीनकाल से ही विद्या का केन्द्र था और यहां के शासकों को प्रायः जनक की उपाधि दी गयी है। इसके अन्तर्गत बिहार प्रान्त के भू प्रदेश सम्मिलित थे। यह पश्चिम में सदानीरा नदी, उत्तर में हिमालय पर्वत और दक्षिण में वैशाली तक व्याप्त था। इसकी राजधानी मिथिला थी। श्री कनिंघम ने इस जनपद की राजधानी जनकपुर को बतलाया है जो मुजफ्फरनगर एवं दरभंगा जिलों के बीच स्थित एक छोटा सा कस्बा है।

सूरसेन :-- राजशेखर ने इसको पांचाल देश में हस्तिनापुर इत्यादि जनपदों के साथ वर्णित

---

1. विद्धशालभञ्जिका अं० १ श्लोक २९

किया है। महाभारत के सभापर्व के अनुसार प्रस्तुत जनपद इन्द्रप्रस्थ के ठीक दक्षिण में मथुरा से लेकर उत्तर में चम्बल नदी तक फैला हुआ था। मथुरा इसकी राजधानी थी।

शक :— शक जाति के लोग प्रारम्भतः मध्य एशिया के निवासी थे। इनके निष्क्रमण का उल्लेख चीनी इतिहासकारों ने किया है। प्राचीन भारतीय साहित्य में शक-मुरुण्ड की चर्चा की गयी है। भारत में इनके निवास स्थान को 'शक स्थान' की संज्ञा दी गई है जो कि पेरीप्लस में कथित सीथिया जिले का निकटवर्ती भूप्रदेश था जहां से सिन्ध नदी प्रवाहित होती है। रामायण, महाभारत, महाभाष्य, चरकसंहिता इत्यादि प्राचीन ग्रंथों में शकों के उल्लेख प्राप्त होते हैं। महाभारत में इन्हें आन्ध्र पुलिंद पल्हव, एवं तुखार इत्यादि जनपदों के साथ बड़ी हेय दृष्टि से वर्णित किया गया है। शकों को म्लेच्छ और इनके शासकों को मिथ्यावादी एवं पांखडी कहा गया है। इनके द्वारा प्रचलित मुद्राएं तथा अभिलेख उत्तरापथ से लेकर मथुरा तक अधिकता से प्राप्त होते हैं।

सिंहल ?— (देखिये लंका)

सिंध :— भारतीय साहित्य में सिंधु-सौवीर का वर्णन मिलता है। राजशेखर के प्रचण्ड पाण्डव या बाल भारत नाटक में इसका उल्लेख है। वैसे तो सिंध नद के तटवर्ती प्रदेश को सिंध कहा जाता था परन्तु बाद में सिंध सागर दोआब को ही सिंध जनपद कहा गया है। महाभारत काल में सिंधु-सौवीर का शासक जयद्रथ था।

सुहम :— वृहत्संहिता के अनुसार प्रस्तुत जनपद वंग एवं कलिंग जनपदों के बीच स्थित था। रघुवंश के चतुर्थ सर्ग में इसे वंग के पश्चिम में कपिशा नदी के निकट स्थित बतलाया गया है। महाभारत की व्याख्या करते हुए श्री नीलकण्ठ ने सुहम को राढ़ का ही परिचायक राज्य स्वीकार किया है। यहां के निवासी भी सुम्हराढ़ कहे जाते थे। दण्डिन् के दशकुमार चरित में दामलिप्त या ताम्रलिप्त बदरगाह को सुम्ह देश के अन्तर्गत स्थित बतलाया गया है। अतः इसके अन्तर्गत बंगाल के वर्तमान मिदनापुर, हुगली और वर्दमान आदि जिले सम्मिलित थे।

सुराष्ट्र :— सौराष्ट्र या सुराष्ट्र सुरठ शब्द का ही परिवर्द्धित रूप है। पुलमायि के नासिक वाले शिला लेख में सुरठ शब्द का प्रयोग किया गया है। ग्रीक विद्वान तालमी के अनुसार काठियावाड़ से लेकर भृगुकच्छ तक का भूभाग सौराष्ट्र जनपद के अन्तर्गत निहित था। अब भी काठियावाड़ का दक्षिणी भाग सोरठ के नाम से विख्यात है। अष्टाध्यायी, महाकाव्यों तथा पुराणों में सुराष्ट्र का उल्लेख हुआ है। अतः काठियावाड़ और वर्तमान गुजरात प्रदेश के कुछ भाग इस जनपद में सम्मिलित थे।

सूर्पारक :— काव्य मीमांसा के अनुसार यह दक्षिणापथ में स्थित एक जनपद था। श्री कनिंघम ने इसे सूरत का परिचायक स्थान बतलाया है। डा० मित्रा ने ललित विस्तर नामक बौद्ध ग्रन्थ के आधार पर इसकी स्थिति कृष्णा नदी के मुहाने पर एक बन्दरगाह के रूप में बतलाई है। प्रस्तुत जनपद दक्षिण के थाना जिले में स्थित सोपारा नामक स्थान का द्योतक कहा जा सकता है। प्रस्तुत जनपद प्राचीन काल में एक विस्तृत जनपद रहा होगा।

सहुड़ :— राजशेखर ने दक्षिणापथ के राज्यों में इसकी गणना की है। कतिपय विद्वानों ने इसका परिचय पश्चिमी अफगानिस्तान के वर्तमान 'सफेदको' और 'सब्ज बाजार' से दिया है।

हरहूख :-- राजशेखर की काव्य मीमांसा में हरहूख जनपद की स्थिति उत्तरापथ में बतलाई गई है। बराहमिहिर की बृहत्संहिता में मद्र एवं सिंधु-सौवीर आदि राज्यों के साथ इसकी चर्चा की गई है। हेमचन्द्र की 'अभिधान चिन्तामणि' नामक रचना से ज्ञात होता है कि हरहूर द्राक्षा अर्थात् अंगूर का पर्यायवाची शब्द है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी अंगूर निर्मित मधु (सुरा) का वर्णन है जिसमें कापिशायन एवं हारहूरक इत्यादि भेद मिलते हैं जो कि संभवतः कपिशा तथा हारहूख से प्राप्त अंगूरों की बनाई जाती थीं। महाभारत के उल्लेखों से हारहूर जनपद की चर्चा प्रायः रामठ देश के साथ पश्चिम में की गई है। डा० मोतीचन्द्र[1] के मतानुसार हारहूर देश का परिचय वर्तमान हिरात से दिया जा सकता है। कनिंघम ने रामठ देश को सिंधु नद के उत्तर में रोमक पर्वत के पास स्थित बतलाया है। अतः प्रस्तुत जनपद की स्थिति उत्तरापथ के पर्वतीय प्रदेश में सिंधु व झेलम नदियों के बीच मानी जा सकती हैं।

हंसमार्ग :-- उत्तरापथ के इस जनपद को कालिदास के मेघदूत में हंसद्वार या क्रौंच-रन्ध्र लिखा गया है। महाभारत के भीष्म पर्व में उल्लिखित देशों की सूची में इसका वर्णन है। मत्स्य-पुराण के अनुसार तोमर और हंसमार्ग गणराज्यों के बीच पावनी नदी प्रवाहित होती थी। पावनी नदी का परिचय निश्चित रूप से नहीं दिया जा सकता। पार्जिटर महोदय के अनुसार यह नदी हिमालय के मध्य से उद्भूत उन तीन नदियों में से एक है जो पूर्व की ओर प्रवाहित होती है। उपरोक्त वर्णन के आधार पर हंसमार्ग जनपद की स्थिति तिब्बत के पूर्वी भाग में निर्धारित की जा सकती है।

हुहुक :-- राजशेखर के मतानुसार यह उत्तरापथ में स्थित जनपद था। पार्जिटर महोदय ने इसे मार्कण्डेय पुराण में वर्णित कुहक; वायु पुराण के चहुक जनपद का द्योतक बतलाया है। यदि मार्कण्डेय पुराण में उद्धृत कुहुक पाठ स्वीकार कर लिया जाय तो यह मत्स्य पुराण में वर्णित कुहु जनपद का परिचायक राज्य समझा जा सकता है जो कि कहीं पर सिंध नदी की सहायक वर्तमान काबुल नदी के तट पर स्थित थे।

हूण :-- कविराज राजशेखर ने हूण जनपद को उत्तरापथ के अन्तर्गत सम्मिलित किया है। महाभारत के भीष्म पर्व में हूणों का वर्णन विदेशियों के रूप में किया गया है। रघुवंश में हूणों का उल्लेख हुआ है। उनका निवास स्थान सिंधु नदी के सुदूर उत्तर में था जहां पर दिग्विजयी रघु के द्वारा यह पराजित किये गये थे।

त्रवण :-- पश्चिमी भारत में त्रवण जनपद का उल्लेख सौराष्ट्र और गुर्जर प्रदेशों के साथ किया गया है। यहां के कवि अपभ्रंश तथा संस्कृत दोनों ही भाषाओं का सुमधुर पाठ करते थे।

न ग र

जनपदों के अतिरिक्त राजशेखर ने तत्कालीन अनेक नगरों के भी वर्णन दिये हैं।

उज्जयिनी :-- यह नगर शिप्रा नदी के तट पर स्थित था। वर्तमान उज्जैन नगर इसका परिचायक नगर है। उज्जयिनी अवन्ति देश या मालवा की राजधानी थी। कालिदास ने इस नगर का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है।

---

1. ज० आव् यू० पी० हि० सो० भाग २ पृष्ठ सं० ११, सन् १९४४

कान्ची :-- यह आधुनिक कान्चीपुरम् या कान्चीवरम् का द्योतक नगर है जो द्रविड़ देश की राजधानी था।

कान्यकुब्ज :-- वर्तमान कन्नौज के परिचायक नगर कान्यकुब्ज के गाधिपुर और महोदय इत्यादि पर्यायवाची शब्द भी दिये गये हैं। राजशेखर के आश्रयदाता गुर्जर प्रतिहार शासकों की यह राजधानी थी। बाल रामायण नाटक के दशम अंक में गंगा के तट पर स्थित इस नगर का उल्लेख किया गया है।

चम्पा:-- यह प्राचीन जनपद अंग की राजधानी थी। कनिंघम के मतानुसार यह नगर चम्पा तथा गंगा नदियों के संगम पर स्थित था। वर्तमान भागलपुर के निकटवर्ती चम्पा नगर या चम्पापुर ग्राम इसके परिचायक हैं। प्राचीन साहित्य में इसे मालिनी भी कहा गया है।

दशपुर :-- मेघदूत के अनुसार दशपुर राजा रन्तिदेव की राजधानी थी। यह चम्बल नदी के तट पर स्थित नगर था। गुप्तकाल के शिलालेखों में इस नगर का वर्णन मिलता है।

प्रथूदक :--यह सरस्वती नदी के तट पर स्थित पूर्वी पंजाब के करनाल जिले का प्रसिद्ध पिहोवा या प्रथूदक तीर्थ है।

प्रयाग :-- यह गंगा यमुना व सरस्वती के संगम पर स्थित भारत का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। राजशेखर ने इसे मध्य देश की पूर्वी सीमा माना है।

वाराणसी :-- आधुनिक काशी या बनारस।

वत्स गुल्म -- कविराज राजशेखर ने वत्सगुल्म नगर को भगवान कामदेव की क्रीड़ा-भूमि बतलाया है। यहीं पर काव्य पुरुष ने गन्धर्व विधि से साहित्य वधू का पाणिग्रहण किया था। कर्पूर मंजरी के अनुसार यह विदर्भ के अन्तर्गत कुन्तल देश की राजधानी थी। महाभारत में वंशगुल्म नामक पवित्र तीर्थ स्थान का वर्णन है जो अमरकन्टक में नर्वदा के उद्गम स्थान पर स्थित था।

विनशन :-- यह थानेश्वर से पश्चिम की ओर सिरहिन्द जिले में स्थित था। यहीं की मरु-भमि में सरस्वती नदी लुप्त हुई है।

हस्तिनापुर :--वर्तमान दिल्ली से ५६ मील दूर दक्षिण पूर्व में स्थित ध्वंसावशेष इस प्राचीन नगर के परिचायक समझे जाते हैं। महाभारत काल में हस्तिनापुर कुरु जनपद की राजधानी थी।

प र्व त

अर्बुद :-- यह राजपूताने में अरावली पर्वतमाला का प्रसिद्ध आबू पर्वत है। श्री नन्दूलाल दे के कथनानुसार यहां वशिष्ठ ऋषि का आश्रम था।

इन्द्रकील :-- राजशेखर के मतानुसार यह उत्तरापथ का पर्वत है। कुछ विद्वानों ने इसे हिमालय के एक शिखर का नाम बतलाया है।

कामरूप :-- यह नीलकूट-गिरि या नीलगिरि का दूसरा नाम है जिसके ऊपर कामाक्षा देवी का मन्दिर है।

कलिन्द :-- इसका वर्णन उत्तरापथ में किया गया है। नन्दूलाल दे के अनुसार यह हिमालय

पर्वत श्रेणी का वह भाग है जहां से यमुना नदी का उद्गम होता है। यही कारण है कि यमुना को कालिन्दी भी कहा जाता है।

गोवर्धन :-- यह मथुरा जिले में वृन्दावन से ८० मील दूर उत्तरी भारत का प्रसिद्ध पर्वत है।

गिरि नगर :-- यह जूनागढ़ से थोड़ी दूर पर स्थित गिरिनार पर्वत है जिसे पुराणों में रैवतक भी कहा गया है। यह जैनों का मुख्य तीर्थस्थान है।

चकोर :-- राजशेखर ने इसे पूर्व देश में स्थित पर्वत बतलाया है। कुछ विद्वानों ने इसे मिर्जापुर जिले के चुनार पर्वत का द्योतक कहा है। परन्तु राजशेखर द्वारा पूर्व देश में वर्णित किये जाने के कारण उपरोक्त मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

चन्द्राचल :-- राजशेखर ने इसे उत्तरापथ में स्थित बतलाया है। संभवतः यह हिमालय का वह शिखर है जहां से से चन्द्रभागा नदी उद्भावित होती है।

दुर्दुर :-- राजशेखर ने पूर्व देश में दुर्दुर पर्वत का उल्लेख किया है। रघुवंश के चतुर्थ सर्ग में मलय और दुर्दुर पर्वतों का वर्णन मिलता है। रामायण एवं महाभारत में उल्लेखों के आधार पर पार्जिटर महोदय ने दक्षिण में नीलगिरि पर्वत को दुर्दुर का परिचायक स्वीकार किया है। अतः स्पष्ट है कि प्राचीन साहित्य में निर्दिष्ट दुर्दुर पर्वत की स्थिति राजशेखर के मत से भिन्न है जिसके लिए कुछ निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

देवसभा :-- यह पश्चिम में संभवतः देवसभा (देवास) प्रदेश के अन्तर्गत ही स्थित था। काव्य मीमांसा में इस पर्वत एवं इसके समीपवर्ती भू-भाग को एक ही संज्ञा प्रदान की गई है।

नेपाल :-- राजशेखर के वर्णनानुसार नेपाल पर्वत तथा नेपाल जनपद दोनों ही पूर्व देश में स्थित थे। इसके वर्णन की आवश्यकता नहीं है।

पाल :-- यह दक्षिणापथ का पर्वत है। डा० भण्डारकर के अनुसार यह महाड़ के निकट था।

बृहद्गृह :-- इसके सम्बन्ध में इतना ही ज्ञात है कि यह पूर्व देश में स्थित था।

महेन्द्र :-- राजशेखर ने महेन्द्र पर्वत की गणना दक्षिणापथ में की है। कालिदास के रघुवंश में भी महेन्द्र पर्वत की चर्चा की गयी है। पार्जिटर महोदय के कथनानुसार पूर्वी घाट का वह पर्वतीय प्रदेश जो गोदावरी और महानदी के बीच विस्तृत है तथा साथ ही गंजाम जिले में स्थित पर्वतमाला ही प्राचीन महेन्द्र पर्वत की परिचायिका है।

मलय :-- पश्चिमी घाट का सीमान्त दक्षिणी प्रदेश जिसमें नीलगिरि से लेकर कन्याकुमारी तक की पर्वत श्रेणियां सम्मिलित हैं, मलय कहा गया है।

माल्य शिखर :-- रामायण में माल्यवान नामक पर्वत का वर्णन मिलता अवश्य है परन्तु वह दक्षिण भारत में स्थित था। राजशेखर ने उपरोक्त पर्वत का परिचय पश्चिम देश में दिया है जिसके सम्बन्ध में कुछ निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

लोहित गिरि :-- श्री वासुदेव शरण अग्रवाल[1] ने लोहित गिरि को हिन्दूकुश पर्वत

---

1. पाणिनिकालीन भारतवर्ष, अ० २, पृ० सं० ४६।

का ही प्राचीन नाम बतलाया है। परन्तु राजशेखर की काव्यमीमांसा में दिये गये वर्णन के अनुसार उपरोक्त गिरि पूर्व देश में स्थित था। सम्भव है कि यह हिमालय की उस पूर्वी श्रृंखला का नाम रहा हो जहां से लोहित्य नद का उद्गम होता है।

सह्य :-- यह दक्षिणापथ में स्थित पर्वत है। कहीं-कहीं पर साहित्य में सह्याद्रि का भी उल्लेख मिलता है। रघुवंश के चतुर्थ सर्ग में सह्यपर्वत का वर्णन उपलब्ध है इसके अन्तर्गत कावेरी से उत्तर और गोदावरी से दक्षिण में पश्चिमी घाट के पर्वतीय भाग निहित बतलाये गये हैं।

श्री पर्वत :-- श्री शैल या श्रीपर्वत दक्षिण भारत में स्थित एक सुविख्यात तीर्थ स्थान है। द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से एक मल्लिकार्जुन शिव का मन्दिर यहीं पर स्थित है। यह पर्वत कृष्णा नदी के तट पर कुर्नुल नामक नगर के समीप है। अग्निपुराण में दिये गये उल्लेख के अनुसार यह कावेरी के तटवर्ती प्रदेशों में स्थित था।

हिमालय :-- इसके परिचय की आवश्यकता नहीं है।

नदियां

इरावती :-- पार्जिटर महोदय के कथनानुसार यह पंजाब में प्रवाहित होने वाली रावी नदी की परिचायिका है। राजशेखर ने भी इसे उत्तरापथ में ही बतलाया है।

उत्पलावती :-- मार्कण्डेय पुराण में सुत्पलावती पाठ मिलता है। यह दक्षिण भारत के तिनीवेली जिले में प्रवाहित होने वाली ताम्रपर्णी की छोटी सहायक नदी है।

करतोया :-- यह उत्तरी बंगाल में रंगपुर, दीनाजपुर और बोगरा जिलों में प्रवाहित होने-वाली वर्तमान कुरती नदी है। महाभारत काल में यह बंगाल और कामरूप देशों के मध्यस्थ होकर बहती थी।

कपिशा :-- राजशेखर ने इसकी स्थिति पूर्व देश में मानी है। यह वर्तमान कोशिया नदी की द्योतक है जो उत्कल और कलिंग देशों के मध्य से प्रवाहित होती थी।

काबेरी :-- प्राचीन साहित्य में कावेरी का उल्लेख बहुत मिलता है। यह दक्षिण की प्रसिद्ध नदी है जिसका उद्गम कुर्ग जिले के ब्रह्मगिरि पर्वत से होता है।

कृष्णा :-- प्राचीन साहित्य में इसका उल्लेख गोदावरी न कावेरी की अपेक्षा कम किया गया है। यह दक्षिण भारत की प्रसिद्ध नदी है जो पश्चिमी घाट से निकल कर मछलीपट्टन के पास समुद्र में मिलती है।

कुहू :-- यह सिंधु की वर्तमान सहायक नदी काबुल है जिसे वेदों में कुभा कहा गया है। ग्रीक लेखकों ने इसे 'कोफेस' के नाम से पुकारा है।

गंगा :-- राजशेखर ने इसे भारत के उत्तर और पूर्व दोनों ही देशों में माना है। यह उत्तरी भारत की पुनीत नदी है जो गढ़वाल जिले के गंगोत्री नामक स्थान से २ मील ऊपर विन्दुसर से निकलती है।

गोदावरी :-- रामायण में इसकी चर्चा की गयी है। यह पश्चिमी घाट के ब्रह्मगिरि पर्वत से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

चन्द्रभागा :-- यह सिंधु नदी की सहायक चिनाब नदी है जो पंजाब की पांच प्रसिद्ध नदियों में से एक है।

ताप्ती :-- यह ऋच्छ पर्वत की सतपुड़ा पर्वत श्रेणी से निकल कर गुजरात प्रदेशों को सींचती हुई समुद्र से मिलती है।

ताम्रपर्णी :-- महाभारत के अनुसार यह एक पवित्र नदी थी। पांड्य देश में प्रवाहित ताम्रपर्णी नदी मोतियों के लिए अति प्रसिद्ध थी। तिनेवेली जिले की वर्तमान चितर नदी ही प्राचीन ताम्रपर्णी है।

तुंगभद्रा :-- यह दक्षिण में कृष्णा की सहायक नदी है जो तुंग और भद्रा नामक दो स्रोतों को लेकर कृष्णा से मिलती है।

देविका :-- यह उत्तरापथ की मद्र देश में बहने वाली प्रसिद्ध नदी थी। पाणिनि की अष्टाध्यायी, विष्णु धर्मोत्तर पुराण और वामन पुराण इत्यादि प्राचीन साहित्य में इसके वर्णन मिलते हैं। आधुनिक देग नदी जो जम्मू की पहाड़ियों से निकल कर स्यालकोट तथा शेखपुरा जिलों में प्रवाहित होती हुई रावी नदी से मिल जाती है, इसकी परिचायिका है।

नर्मदा :-- यह दक्षिण भारत की प्रसिद्ध नदी नर्वदा है जो अमरकण्टक से निकल कर भृगुकच्छ के निकट अरब सागर में गिरती है।

पयोष्णी :-- राजशेखर ने दक्षिणा पथ में इसका वर्णन किया है। प्राचीन काल में इस नदी का धार्मिक महत्व बहुत अधिक था। यह विदर्भ देश में प्रवाहित होती थी। यह ताप्ती की सहायक वर्तमान पूर्णा नदी है।

भैमरथी :-- इसका वर्णन भी दक्षिणा पथ में ही किया गया है। प्राचीन साहित्य में इसे भीमरक्षी भी कहा गया है। यह कृष्णा नदी की सहायक वर्तमान भीमा नदी है जो पूना के पास से निकलती है।

महो :-- राजशेखर ने पश्चिम देश में इसका वर्णन किया है। यह मालवा प्रदेश से निकल कर कच्छ की खाड़ी में गिरती है।

यमुना :-- इसका वर्णन उत्तरापथ में किया गया है। यह उत्तर भारत की प्रसिद्ध यमुना नदी है। यह गढ़वाल के पहाड़ों में कलिन्द पर्वत से निकलती है।

रावण गंगा :-- इसके विषय में कुछ ज्ञात नहीं है। राजशेखर ने इसका नाम दक्षिणापथ में उद्धृत किया है।

वेणा :-- इसके अनेक नाम वेणा, वेण्वा, वेण्ड्या और चिंता इत्यादि मिलते हैं। पार्जिटर महोदय ने इसे गोदावरी और वर्दा नदियों की सहायक माना है। कतिपय विद्वानों का कथन है कि यह कृष्णा की सहायक नदी है।

वंजुरा :-- राजशेखर ने दक्षिणापथ की नदियों में इसका उल्लेख किया है। इसके विभिन्न नाम वंजुला, वंजुका, और मंजुला भी प्राचीन साहित्य में प्राप्त होते हैं। यह गोदावरी की सहायक नदी है जिसका उद्गम सह्यपाद पर्वत से होता है।

वार्तघ्नी :-- काव्यमीमांसा में इसका वर्णन पश्चिम देशमें मिलता है। पुराणों में इसे वृतघ्नि या वृतघ्नि भी कहा गया है। विद्वानों ने सावरमती की सहायक नदी वात्रक से इसका परिचय दिया है।

वितस्ता :-- यह पंजाब की प्रसिद्ध झेलम नदी है।

विपाशा :-- यह पंजाब की प्रसिद्ध नदी व्यास है। पाणिनि ने भी विपाशा नदी के किनारों पर निर्मित कुओं की चर्चा की है। यद्यपि इस समय यह सतलज की सहायक नदी है परन्तु विद्वानों का मत है कि प्राचीनकाल में यह एक स्वतन्त्र नदी रही होगी।

सोण :-- इसे हिरण्यबाहु तथा हिरण्यवाह भी कहा गया है। नर्मदा के उद्गम स्थल के पास से ही निकल कर यह पटना के पास गंगा नदी से मिलती है। राजशेखर ने इसे पूर्व देश में प्रवाहित नद कहा है।

सरस्वती :-- राजशेखर ने उत्तरापथ और पश्चिम देश दोनों ही में सरस्वती नदी का उल्लेख किया है। उत्तर में सरस्वती नदी पृथूदक के पास से बहती हुई विनशन के पास लुप्त हो जाती है। पश्चिम देश में सरस्वती नदी बड़ौदा के पास से कच्छ की खाड़ी की ओर प्रवाहित होती है।

स्वभ्रवती :-- यह आधुनिक सरावती या सावरमती का ही दूसरा नाम है जो गुजरात में होती हुई कच्छ की खाड़ी में गिरती है।

सिंधु :-- वर्तमान सिंधु नदी कैलाश पर्वत के पश्चिम प्रदेश से निकलती है। महाभारत-काल में सिंधु नाम का जनपद इसके पूर्वी किनारे की तरफ पंजाब में फैला हुआ था।

शतद्रु :-- यह पंजाब की प्रसिद्ध नदी सतलज है।

हिडिम्बा :-- राजशेखर के अनुसार हिडिम्बा नदी पश्चिम देश में प्रवाहित होती थी। कुछ विद्वानों ने हिडिम्बा नदी का परिचय चर्मण्डवती या चम्बल से दिया है जो महाभारत के अनुसार हिडिम्बा बन के समीप बहती है।

PUBLICATIONS OF THE U. P. HISTORICAL SOCIETY

JOURNALS

The following back numbers of the **Journal of the U. P. Historical Society** are available :

OLD SERIES

Volume	*Part*	*Price*	*Volume*	*Part*	*Price.*
II	I	Rs. 5/-	X	II	Rs. 3/-
II	II	Rs. 5/-	XI	I	Rs. 3/-
III	I	Rs. 5/-	XI	II	Rs. 3/-
III	II	Rs. 5/-	XII	I	Rs. 3/-
III	III	Rs. 5/-	XII	II	Rs. 3/-
IV	I	Rs. 5/-	XIII	I	Rs. 3/-
IV	II	Rs. 5/-	XIII	II	Rs. 3/-
V	I	Rs. 3/-	XV	I	Rs. 3/-
VI	I	Rs. 3/-	XV	II	Rs. 3/-
VI	II	Rs. 3/-	XVIII	I & II	Rs. 6/-
VII	I	Rs. 3/-	XIX	I & II	Rs. 6/-
VII	II	Rs. 3/-	XX	I & II	Rs. 6/-
VIII	I	Rs. 3/-	XXII	I & II	Rs. 6/-
IX	I	Rs. 3/-	XXIII	I & II	Rs. 6/-
IX	II	Rs. 3/-	XXIV & XXV		Rs. 6/-
X	I	Rs. 3/-			

NEW SERIES

I	I & II	Rs. 6/-	IV	I & II	Rs. 6/-
II	I	Rs. 3/-	V	I	Rs. 3/-
II	II	Rs. 3/-	V	II	Rs. 3/-
III	I	Rs. 3/-			
III	II	Rs. 3/-			

For copies apply to

The Honorary Secretary,

The U. P. Historical Society,

Department of Ancient Indian History and Archaeology,

Lucknow University, Lucknow (India).

PUBLICATIONS OF THE U. P. HISTORICAL SOCIETY

Bulletins

1. Sri B. N. Srivastava: History of the Maukharis of Kanauj during the Seventh Cent. A. D. Re. 1.50

2. Prof. C. D. Chatterjee: Some Unique Gold and Brass Coins of the Imperial Guptas Rs. 2.25

Memoirs

1. Dr. Moti Chandra: Geographical and Economic Studies in the Mahābhārata, Upāyana-parva (*Out of print*) Rs. 5/-

2. Dr. V. S. Agrawala: Gupta Art Rs. 5/-

3. Dr. Moti Chandra: Technique of Mughal Painting Rs. 10/-

For copies apply to

The Honorary Secretary,
The U. P. Historical Society,
Department of Ancient Indian History and Archaeology,
Lucknow University, Lucknow (India).

Printed by M. R. Nagar at the Pioneer Press,
Lucknow—268.